॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

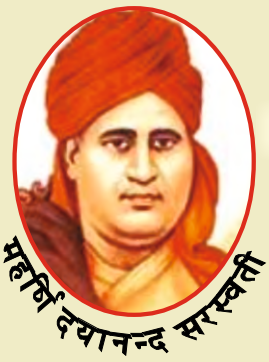

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

दिसम्बर 2021 वर्ष 25, अंक 11 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2077 ❑ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल:tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

समर्पित सिपाही-स्वामी श्रद्धानन्द

❑ राज करनी अरोड़ा

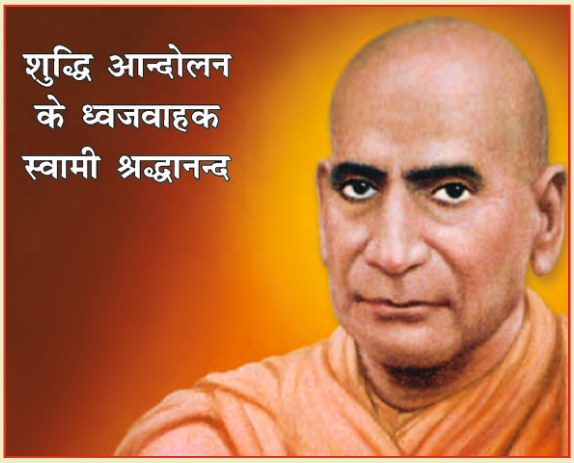

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की गणना उन महापुरुषों में होती है जिन्होंने महर्षि दयानन्द के मिशन् को पूरा करने में अपना सर्वस्व होम कर दिया। दयानन्द के मानसपुत्र, स्त्री शिक्षा के प्रचारक, प्रखर राष्ट्रवादी, अनुभवी नेता, बहुमुखी प्रतिमा के धनी, स्वामी श्रद्धानन्द धर्मवीर, कर्मवीर, दानवीर थे स्वाधीनचेता अमर बलिदानी, त्यागी, तपस्वी, युग-पुरुष, अग्रणी नेता, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुरोधा और स्वतन्त्रता सेनानी अमर बलिदानी थे इनका जन्म फरवरी 1856 में एक प्रसिद्ध, सम्पन्न ईश्वर परायण घराने में हुआ। बाद में मुंशीराम के नाम से पुकारा गया। यज्ञोपवीतोपरान्त प्रारम्भिक शिक्षा बनारस में हुई। पुलिस इन्सपैक्टर पिता के बार-बार स्थानान्तारण के कारण नियमित और व्यवस्थित रूप से शिक्षा न चल पाई, क्वीन्स कॉलिज में एंट्रेस करने के उपरान्त् इलाहाबाद में मेयोकॉलिज में प्रवेश लिया। साहित्यिक अध्ययन् भी खूब किया। लाहौर में वकालत की अन्तिम परीक्षा पास की। 21 वर्ष की आयु में प्रसिद्ध रईस और साहूकार राय सालिग्राम की सुपुत्री श्रीमती शिवदेवी से विवाह हुआ। 1891 में यह देवी स्वर्ग सिधार गई और इस प्रकार केवल 35 वर्ष की आयु में ही मुंशीराम पर पारिवारिक संकट आ पड़ा। दो पुत्र और दो पुत्रियों के पिता मुंशीराम पर मां का भी उत्तरदायित्व आ पड़ा। तप्-त्याग्-पूर्वक छोटे-छोटे बच्चों का पालन किया, उन्हें मातृस्नेह भी दिया और पिता का संरक्षण-परिपालन भी। इसी त्याग्-तपस्या ने इन्हें आगे चलकर गुरुकुल का स्नेहिल सफल आचार्य, अधिष्ठाता और कुलपति भी बना दिया।

मुन्शीराम की जीवन-गाथा प्रमाण है कैसे महर्षि दयानन्द के स्निग्ध सान्निध्य रूपी पारस ने भोग-विलास में लिप्त् उच्छृखल मुन्शीराम रूपी लोहे को स्वर्ण बना दिया। जिस महर्षि के एक वाक्य ने अमीचन्द को हीरा बना दिया, उनके एक साक्षात्कार ने पुलसिया सिपाही लेखराम को सन्त रक्त साक्षी आर्यवीर मुसाफिर अमर शहीद बना दिया, एक धैर्य युक्त मुस्कराते मुख की झलक ने नास्तिक् गुरुदत्त को ईश्वर भक्त आस्तिक् बना दिया, उसी तरह बरेली में सन् 1879 में पधारे स्वामी दयानन्द के प्रवचनों ने मुंशीराम को महात्मा मुन्शीराम और फिर स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया। सभी शंकाओं का उच्छेदन हो गया, सभी दुर्गुण दुर्व्यसनों का खात्मा हो गया। ''सत्यार्थ प्रकाश'' के अध्यपनानुशील ने जीवन का कायाकल्प कर दिया। लाहौर में बच्छोवाली आर्य समाज में प्रवेश एक ऐतिहासिक दस्तावेज बन गया। समाज के प्रधाना ला. साईदास के शब्दों में इस नई स्पिरट ने वैदिक सिद्धान्तों की धूम मचा दी। समाज में फैली कुरीतियां-बाल-विवाह, विधवा-विवाह-निषेध, जाति-पाति, अस्पृश्यता, नारी, अशिक्षा, पर्दा-प्रथा आदि के समूलोच्छेदन में इस वीर ने कमर कस ली। एतदर्थ समाज के विरोध विपक्षियों की ओर से सामाजिक बहिष्कार की धमकियों का साहस से सामना किया। ईसाइयत और इस्लाम द्वारा धर्मान्तरण और आर्यजाति पर होने वाले आक्रमणों का डटकर सम्मुख किया।

धुन के पक्के मुंशीराम हर बात को तर्क की कसौटी पर कसते थे। विवेक से तुरन्त निर्णय करने की क्षमता उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता थी। विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए अपनी राह बना लेना उनका स्वभाव था। ऋषि द्वारा निर्दिष्ट गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरूद्धार करने के लिए गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना उनके दृढ़ निश्चय और प्रबल इच्छा-शक्ति का प्रमाण है। हिमालय की शैवालिक की पहाड़ियों से घिरे कांगड़ी गांव के शान्त् प्राकृतिक और सात्विक वातावरण में इस गुरुकुल के छात्रों धार्मिक भावना, देश-प्रेम, धर्मरक्षण, श्रद्धा, आत्म-विश्वास वैदिक सिद्धान्तों के प्रति आस्था कूट-कूटकर भरी जाती थी, इनमें भक्ति भावना, बलिदान का जज्बा भरपूर था। जोशीले, धर्मपरायण व्यक्तियों का दल तैयार करने का यह सर्वोत्तम साधन था। अंग्रेज सरकार के लिए यह खतरे की घंटी थी। आगे चलकर इस गुरुकुल ने राष्ट्रीय जागरण में महती भूमिका अदा की। कई वर्ष तक तो इस गुरुकुल पर अंग्रेजों की कोप-दृष्टि रही। उन्हें गुरुकुल की दीवारों के पीछे देशद्रोह की गन्ध आती थी। इस पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी। इसे बागियों

(शेष पृष्ठ 15 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सुख-दु:ख का जनक कौन?

- *पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी*

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ट्रस्ट प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (जन्मभूमि)

प्राय: सभी की यह मान्यता है कि हमारे सुख-दु:ख का कारण वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि अन्य घटक हैं। परन्तु जब व्यक्ति अपने सुख-दु:ख का कारण अपने को नहीं मानकर किसी अन्य वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति व अवस्था को मान लेता है तो उसका सुख-दु:ख 'पर' अर्थात् अन्य पर आश्रित हो जाता है,

यह मानना कि अपने सुख-दु:ख का कारण अन्य है युक्तियुक्त नहीं है। कारण कि यदि हमें अन्य कोई दु:ख दे सकता है तो दु:ख मिटाने में हम लग जाते है जबकि दु:ख अन्य कोई दे ही नहीं सकता। अत: जगत् और परमात्मा भी दु:ख नहीं दे सकते। जिसके पास जो वस्तु है ही नहीं, वह उसे कैसे दे सकता है। अत: यह मानना पड़ता है कि अपने दु:ख का कारण अन्य कोई भी नहीं है। उदाहरणार्थ-'क' व्यक्ति ने किसी को गाली दी कि 'तुम गधे हो' यह गाली वहाँ खड़े सैकड़ों व्यक्तियों ने सुनी, परन्तु उन सैकड़ों व्यक्तियों को गाली से दु:ख नहीं होगा, दु:ख केवल उसी व्यक्ति को होगा जो गाली को सुनकर यह मानेगा कि इसने 'गधा' कहकर मेरा अपमान किया है। जिसने यह मान लिया कि इसके कहने से मैं गधा नहीं हो गया, मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ा उसे दु:ख नहीं होगा। यदि यही वाक्य अंग्रेजी में कहा- You are a donkey और सुनने वाला अंग्रेजी नहीं जानता है तो उसे दु:ख नहीं होगा अथवा वही वाक्य 'तुम गधे हो' पिता ने अपने शिशु को कहा तो वह बुरा नहीं मानेगा, प्रत्युत मुस्करायेगा। विवाहोत्सव पर ससुराल में स्त्रियाँ वर व वर के परिवारवालों को गीतों में गालियाँ देती हैं, परन्तु उन गालियों को कोई बुरा नहीं मानता। यदि गाली दु:ख देती तो गाली सुनने वाले सबको समान रूप से दु:ख होता, सब काल में होता, सब परिस्थितियों में होता। परन्तु ऐसा नहीं देखा जाता। इससे यह प्रमाणित होता है कि गाली देने की घटना दु:ख का कारण नहीं है।

दूसरा उदाहरण लें। मान लें कि मेरे पास पचास हजार रूपये हैं, उन रूपयों को किसी ने मेरे से छीन लिया तो मुझे घोर दु:ख होगा। यदि ये रूपये किसी बैंक के हैं जिन्हें मैं उसी बैंक की किसी शाखा में जमा कराने जा रहा हूँ फिर वे रूपये मेरे से छिन जावें तो मुझे पहली बार छिनने से जितना दु:ख हुआ दूसरी बार उतना दु:ख नहीं होगा। यदि मैंने अपने पचास हजार रूपये देकर किसी जौहरी से एक नगीना खरीद लिया और उस जौहरी से मेरे सामने ही पचास हजार रूपये छीन लिए गये तो रूपये छिनने का अब मुझे दु:ख नहीं होगा। यदि रूपये छिनने की घटना से 'दु:ख' होने का संबंध होता तो तीनों ही अवस्थाओं में समान दु:ख होना चाहिए था, परन्तु ऐसा नहीं होता। होता यह है कि जिस वस्तु से हमने जितना गहरा संबंध जोड़ रखा है, उतना ही गहरा दु:ख उसके वियोग से होता है। यह दु:ख घटना के कारण नहीं होता है, प्रत्युत घटना के प्रति प्रतिक्रिया करने से होता है। इससे सिद्ध होता है कि परिस्थिति या घटना सुख-दु:ख का कारण नहीं है।

हम एक उदाहरण और लें। किसी स्त्री के प्रियतम पति की किसी दुर्घटना में, विदेश में मृत्यु हो गई। उस स्त्री को दूसरे दिन मृत्यु का समाचार मिला। समाचार मिलते ही दु:ख का वज्रपात् हो गया। यदि दु:ख का संबंध उसके पति की मृत्यु की घटना से होता तो पति की मृत्यु तो पहले दिन ही दुर्घटना में हो गयी थी। अत: उसी समय दु:ख होना चाहिए था। परन्तु मृत्यु के दिन दु:ख नहीं हुआ इस घटना से जितना दु:ख पत्नी को हुआ उतना दु:ख पुत्र को नहीं हुआ, पुत्र को जितना दु:ख हुआ उतना पड़ौसी को नहीं हुआ। पड़ौसी को जितना दु:ख हुआ उतना नगर के अन्य नागरिकों को नहीं हुआ। इससे तात्पर्य यह निकलना कि घटना दु:ख का कारण नहीं है, दु:ख हुआ घटना की जानकारी मिलने पर, उस जानकारी की प्रतिक्रिया करने पर, जिसने जैसे और जितनी प्रतिक्रिया की, उसे वैसे ही उतना ही दु:ख हुआ।

कारण-कार्य संबंध का यह नियम है जैसे जब तक विद्युत की लहर आती रहती है और यन्त्र की स्थिति यथावत् रहती है, तब तक उससे चलने वाले यंत्र, रेडियो, टेलीविजन, पंखा बराबर उसी प्रकार समान रूप से चलते रहते हैं, क्योंकि उनमें कारण-कार्य संबंध विद्यमान् है। परन्तु सुख-दु:ख के विषय में यह बात नहीं देखी जाती है। जिस वस्तु, परिस्थिति या घटना को वह अपने दु:ख-सुख का हेतु मानता है, उसके यथावत् विद्यमान् रहने पर भी सुख-दु:ख में परिवर्तन् चलता रहता है। इससे यह स्पष्ट है कि वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, अवस्था, घटना आदि सुख-दु:ख के कारण नहीं है। सुख-दु:ख का कारण हमारी स्वयं की अज्ञान जनित मान्यता है। इसे एक उदाहरण से समझें-जैसे सर्प को कोई व्यक्ति लाठी से मारता है तो सर्प अपने मारने व दु:ख का कारण लाठी को मानता है। जिससे वह अपने फण का प्रहार लाठी पर करता है, लाठी को काटता है। जबकि वास्तविक कारण लाठी चलाने वाला व्यक्ति है, लाठी तो निमित कारण है जैसे सर्प द्वारा अपनी मार का कारण लाठी को समझना भूल है उसी प्रकार अपने सुख-दु:ख का कारण वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि अन्य को समझना भूल है, ये सब तो निमित्त कारण है। यदि हम प्रतिक्रिया न करें, वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति के प्रति उपेक्षा भाव रखें, उदासीन भाव व समता में रहें, तटस्थ या द्रष्टा रहें तो कोई वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि सुख-दु:ख नहीं दे सकती। दु:खी-सुखी हम स्वयं अपने ही द्वारा की गई प्रतिक्रिया से होते हैं। अत: दु:ख-सुख का कारण अन्य को मानना भ्रान्ति है। जैसे कोई व्यक्ति कांटों से बचने के लिए बबूल के कांटे तोड़ता रहे, पर बबूल की जड़ को न उखाड़े। इसी प्रकार दु:ख की मूल भूल अज्ञान को दूर न कर विद्यमान् दु:ख को दूर करते रहने से नये दु:ख सतत् उत्पन्न् होते रहेंगे। यही कारण है कि सब प्राणी अपना दु:ख दूर करने का अनन्तकाल से प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु दु:ख आज भी ज्यों का त्यों बना हुआ है। दु:ख में न कमी आई और न अंत हुआ, भविष्य में भी इस भूल के रहते अनन्तकाल तक कभी भी दु:ख दूर नहीं होने वाला है।

(अनौपचारिक चर्चा से प्राप्त कुछ अंश)

आप कौन सी श्रेणी में है?

मनुष्य ने हर क्षेत्र में काफी उन्नति कर ली है। चिकित्सा का क्षेत्र हो, विज्ञान का क्षेत्र हो, नभ-तल के रहस्यों की जानने का क्षेत्र हो, सभी जगह मनुष्य ने अपनी विजयी उपस्थिति दर्ज की है। आज चिकित्सा के क्षेत्र में हुये अविष्कारों से मनुष्य ने अपनी आयु तक को बड़ा लिया है। पानी के ऊपर के जहाज तो बनाये ही अब पानी के नीचे भी चलने वाले जहाज भी बना लिएं। हवा में उड़ने वाले जहाज तो अब पुरानी बात हो गई, इन सभी क्षेत्रों में मनुष्य की खोज अभूतपूर्व है परन्तु मनुष्य अभी तक मनुष्य ही नहीं बन पाया, डाक्टर बन गया, वैज्ञानिक बन गया, अध्यापक बन गया, राजनेता बन गया, अभिनेता बन गया पर क्या मनुष्य बना विचारे। इस पृथ्वी पर जीवन कैसे व्यतीत करना चाहिए यह अभी तक हम नहीं सीख पाए।

जीवन का उद्देश्य क्या है? इसके बारे में तीन विचारधाराएं हैं। कुछ लोगों का तो जीवन के सम्बन्ध में यह विचार है कि यह संसार जीव के लिए हितार्थ ही बनाया गया है अत: जीवन का उद्देश्य है, Eat and be merry खाओ और मौज उड़ाओ। यह संसार नाचने गाने हँसने और मजे करने के लिए बना हुआ है। ऐसे लोगों की धारणा है कि भाड़ में जाए अच्छाई-बुराई। यारों को तो अपने हल्वे मांडे से काम है। कोई मरे कोई जीवे, हमे बतासे खाने से मतलब है। वही वह लोग हैं जिनका मत है-**यावत जीवेत सुखम्, जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतम् पिवेत् भस्मी भूतस्य देहस्य पुनर्गमनं कुत:,** जब तक जीवो खूब सुख से जीओ, खूब घी पीओ, यदि पास न हो तो उधार लेकर पीओ, जब यह शरीर जल कर राख हो जाएगा तो फिर किसे वापस आना है, जिस तरह बन पड़े आनन्द करो। सृष्टि की आयु करोड़ों अरबों वर्षों की है, उसके सामने हमारी साठ उत्तर वर्ष की आयु की तुलना ही क्या। अत: इस पर विचार करना, उस पर चिन्ता करना, अपना समय व्यर्थ में नष्ट करना है, सरासर भूल और पागलपन है। इस प्रकार के लोगों की संख्या अधिक है। इस समुदाय की तुलना बढ़ई के बसूले से की जा सकती है। जिन लोगों ने बढ़ई को बसूले से कार्य करते देखा है, वह जानते हैं कि उसके द्वारा बढ़ई लकड़ी का छीलन सारे का सारा अपनी ओर डालता है, ठीक इसी प्रकार इस प्रकार के लोग अपना पेट भरने में मस्त व व्यस्त रहते हैं। दुनिया जाए भाड़ में उनको अपनी ही चिन्ता है, इन लोगों का उद्देश्य यही रहता है- तुझे पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू।

दूसरे ढंग का समुदाय वह है जिसकी तुलना बढ़ई के रन्दे से की जा सकती है। बढ़ई का रन्दा जब चलता है तो लकड़ी का छिलका सबका सब दूसरी ओर फेंकता है, अपनी ओर नहीं डालता। ये वे लोग हैं जो सारी दुनिया को धोखा मानती हैं। सारी सृष्टि को खोखला मानते हैं। ऐसे लोग छोटी-छोटी बुराइयों को छोड़ने की अपेक्षा बुराई के उस स्रोत को ही छोड़ना उचित समझते हैं और प्रचार करते हैं। वह दुनिया से मुँह मोड़ कर त्यागी बन जाते हैं और इसी में अपना कल्याण समझते हैं। संसार के सारे सुखों को जगत् के सब पदार्थों को दूसरों के हवाले करके अपने आप दुनिया से अलग-थलग होने में ही अपनी भलाई मानते हैं। इनको दुनिया के सुख व दुख से कोई सरोकार नहीं, वे केवल अपना अगला जन्म सुधारने में ही अपने कर्तव्य को पूरा करना समझते हैं।

तीसरा समुदाय वह है जिसे बढ़ई का आरा जब चलता है तो लकड़ी का बुरादा आगे तरफ भी फेंकता है और पीछे की ओर भी।

इस समुदाय से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों की यही विशेषता है कि वह अपना भला चाहते हैं, परन्तु दूसरों का भला करके। ऐसे लोग प्रात: काल उठते ही प्रभु से याचना करते हैं-हे ईश! सब सुखी हों, कोई दु:खी न हो, सभी भद्र भाव से देखें, सभी सन्मार्ग के पथिक हों, सबका भला करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण और कहने की आवश्यकता नहीं कि सब के कल्याण में ही हमारा कल्याण है। जब हम सब का शब्द प्रयोग करते हैं तो सब में हम स्वत: ही सम्मिलित हो जाते हैं। अन्तत: हम भी तो सबमें से एक हैं। आपाधापी का जीवन भी कोई जीवन है? व्यक्तिगत् रूप से सुखी बन कर कोई स्थायी सुख की प्राप्ति नहीं कर सकता। साधारणतया जो व्यक्ति संसार में पदार्पण करते हैं, उनके जीवन का लक्ष्य उपरोक्त तीन में से किसी न किसी एक समुदाय से सम्बन्धित होता है। हममें प्रत्येक को अपने बारे में सोचना चाहिए कि हमारा सम्बन्ध किस श्रेणी के साथ है।

इन तीन श्रेणियों के अतिरिक्त एक और अधम श्रेणी भी है। वह उन व्यक्तियों की है जिनका मन्तव्य है कि न खेलेंगे न खेलने देंगे। अपना भला भी न करेंगे, दूसरों का भी न चाहेंगे। न अपना जीवन सुखी बनाएंगे, न ही दूसरों के लिए सुख का साधन उपस्थित करेंगे। पड़ोसी की दीवार अवश्य गिरवाएंगे चाहे ऐसा करने से उनका अपना मकान ही क्यों न गिर जाए। ऐसे व्यक्ति पिशाचवृत्ति के होते हैं। चार श्रेणियों का दिग्दर्शन् का अभिप्राय आपका ध्यान् इस ओर दिलाना है कि हम अपने जीवन के सम्बन्ध में सोचें, विचारें और देखें कि कौन सी श्रेणी में हमारी गिनती होती है।

केवल अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहने वाला व्यक्ति मनुष्य नहीं कहला सकता। सारे भूण्डल को आर्य श्रेष्ठ और सुखी बनाने वाला व्यक्ति ही आर्य अथवा श्रेष्ठ व्यक्ति कहलाता है। जिसके अन्दर दूसरों के प्रति सहानुभूति नहीं या जो केवल अपने लिए जीता है जिसका जीवन उद्देश्य केवल अपना ही भला करना है। ऐसे व्यक्ति में और पशु में अन्तर ही क्या है?

अजय टंकारावाला

सदा फूले फले टंकारा

ऋषि दयानन्द का टंकारा, प्यारा तीर्थ धाम हमारा।
इस पावन धरती का कण-कण, लगता है प्राणों से प्यारा।
ऋषि चरणन की धूल पवित्र, बीती यादों का लशकारा।
देख-देख फूले न समाते, बोधोत्सव का परम नजारा।
जन्म-गृह के दर्शन दुर्लभ, चमके जीवन भाग्य सितारा।
वैदिक धर्म के जयकारों से, गूँज उठे भवमंडल सारा।
प्यारे ऋषि की प्यारी बातें, बरसाती हैं अमृत धारा।
सत्य संग की बहती गंगा में, करें स्नान चढ़े रंग न्यारा।
सहगल और मुंजाल ने मिलकर, लगन से सेवा का व्रत धारा।
टंकारा के ट्रस्ट ने ऐसा, ऋषि नगरी का रूप संवारा।
इस नगरी में जब-जब आते, मिले जीवन को नया सहारा।
ऋषि उपकार की गाथा गाते, सदा फले फूले टंकारा।

-वेदप्रकाश शर्मा धारीवाल
103 अंकुर-बी, वशी फलिया, हालर बलसाड़-गुज. 396001

बच्चों के निर्माण में उपेक्षा घातक है

❒ स्व.पं. राजवीर शास्त्री

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि-बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करें, जिससे सन्तान् सभ्य और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। जब बोलने लगे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सकें, वैसा उपाय करे। जब वह कुछ-कुछ बोलने और समझने लगे, तब सुन्दर वाणी और बड़े छोटे मान्य पिता-माता राजा, विद्वान् आदि से भाषण, उनसे वर्तमान् और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करें। जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न होके सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे।'' (स.प्र. द्वितीय समु.)

बालक न केवल अपने ही वंश का दीपक होता है प्रत्युत राष्ट्र की भी सम्पत्ति होता है। जिस प्रकार राष्ट्र को सुसमृद्ध बनाने के लिए हम सब प्रकार के प्रयत्न करते हैं और सुरक्षा भी करते हैं। बालक के निर्माण में प्रथम गुरु माता होती है। आचार्य चाणक्य लिखते हैं-**लालयेत् पञ्च वर्षाणि** अर्थात् पाँच वर्ष तक बच्चे का लालन पालन माता किया करे। प्रत्येक घर की शान घर में खेलते कूदते बच्चे ही होते हैं। किसी कार्यवश बच्चे घर से बाहर चले जायें, तब घर-घर नहीं, प्रत्युत अरण्य सा लगता है अथवा किसी कारणवश् सन्तान् का अभाव रहता है। तब माता-पिता परेशान रहते हैं। सन्तान् न होना, होकर भी मूर्ख रहना, अथवा दुर्जन हो जाना गृहस्थ का महान् दु:ख होता है। संस्कृत के एक नीतिकार ने लिखा है-**अज्ञात मृत-मूर्खेषु वरमाद्यौ न चान्तिमः। सकृत क्लेशायैवाद्यौ मूर्खस्तु पदे-पदे॥** अर्थात् सन्तान् न होना मर जाना, इससे कुछ काल के लिए ही दु:ख होता है, परन्तु मूर्ख रहना या असभ्य रह जाना जीवन भर क्लेश देने वाले होते हैं। इसीलिए हमारे पूर्वज ऋषि-महर्षियों ने इन दु:खों से बचने के लिए हमें बहुत पहले ही सचेत किया था।

माता की शिक्षा का समय बालक के प्रथम पाँच वर्ष होते हैं। यद्यपि शिक्षा का समय गर्भस्थ शिशु भी होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि बालक अभिमन्यु पर गर्भस्थावस्था में ही चक्रव्यूह-भेदन के संस्कार पड़े थे। परन्तु यह बहुत तीव्र संस्कार वालों की बात हो सकती है। बच्चा जैसे ही बोलने लगता है, तब उसकी जिज्ञासावृत्ति प्रबुद्ध होती है जिस दशा को माता ही समझती है और उसे समझाती है। बच्चे की तोतली भाषा के भावों को भी समझकर उसका मार्गदर्शन् करती हैं। महर्षि यद्यपि बाल ब्रह्मचारी थे किन्तु ग्रन्थों में लिखी बातें बहुत ही अलौकिक तथा मार्गदर्शन् करती हैं।

कन्याओं को शिक्षित करने के लिए महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द आदि ने कितना प्रयास किया, वह बहुत ही सराहनीय व स्तुत्य है। क्योंकि सुशिक्षित माता ही सन्तान् को सुशिक्षित बना सकती है। आज का समय बदल रहा है। आर्थिक समस्या दिन-प्रतिदिन विकराल बनती जा रही है। पुरुषों के साथ माताओं को भी नौकरी करनी पड़ती है। दोनों के सेवा करते हुए बच्चों की देखभाल करने का किसी को समय ही नहीं। अपने दुधमुँहे बच्चों को नौकर या धाय आदि के सहारे छोड़कर सेवा करने चले जाते हैं, जिससे दोनों मिलकर गृहस्थ के भार का वहन कर सकें।

इन बच्चों के जिज्ञासा भाव को कौन शांत करे, यह भगवान भरोसे से ही रहता है। बच्चों का जो प्रथम विद्यालय होता है, वह नौकरी पर छोड़ देना कहाँ तक बुद्धि संगत होता है, यह सब अज्ञात अवस्था में ही बीतता है। यह काल ही बच्चों के निर्माण अथवा सीखने का होता है। बच्चों को यह समय नौकर अथवा धायों के पास ही बिताना पड़ता है। जो समय माता के सान्निध्य में रहकर सद्गुणों को सीखने में बीतता है। फिर बच्चों का निर्माण कैसे सम्भव है। यह समय सद्गुणों व पारिवारिक व्यवहारों से वंचित हो जाता है, ऐसे बच्चे भविष्य में सभ्य तथा अच्छे नागरिक बन जायेंगे, ऐसी आशा करना दुराशामात्र ही होगी। इस अवस्था में जिज्ञासा के अतिरिक्त ग्रहण करने की शक्ति भी अत्युग्र होती है, बच्चा जिस वातावरण में रहता है, उनकी भाषा को भी बिना सिखायें ही सीख जाता है। जिस भाषा को स्कूल विद्यालयों व महाविद्यालयों में क्रमश: पढ़ते हुए भी बच्चे पूर्ण अधिकार नहीं कर पाते, बच्चे उस भाषा में एम.ए. तक पढ़कर भी पूर्ण से अधिकार नहीं बोल सकते, जैसा अधिकार बच्चे का अपनी मातृभाषा पर होता है। यद्यपि बच्चों को विद्यालय की भांति कोई सिखाता नहीं, किन्तु बच्चा दो-तीन वर्ष की अवस्था में ही अपनी मातृभाषा को सीख जाता है। जिसमें लिंग, वचन की किसी भी प्रकार त्रुटि नहीं करता है, इससे बच्चे की ग्रहण शक्ति का अनुमान् आप कर सकते हैं। यही अमूल्य समय माता-पिता से दूर नौकर व धार्यों के सान्निध्य में बच्चे बितावें, यह बहुत ही दुर्भाग्य की बात है। छोटे-छोटे बच्चे एक मिट्टी के कच्चे घड़े के समान होते हैं। जैसे आप कच्चे घड़े को जैसा बनाना, मोड़ना चाहते हैं, वह वैसा ही बन जाता है। कच्चे घड़े पर जैसा रंग-रोगन व बेल-बूटे आदि बना देते हैं, अग्नि में पकने पर वे वैसे ही बने रहते हैं। इसी प्रकार जब कोई पौधा छोटा होता है, उसमें अपरिपक्व तनों को इच्छानुसार मोड़ सकते हो, परन्तु बड़े होने पर मोटे-मोटे तनों को नहीं मोड़ा जा सकता अथवा गीली लकड़ी को भी आप मोड़ सकते हो, परन्तु सूखने पर उसका मुड़ना सम्भव नहीं, वह टूट जायेगी, किन्तु मुड़ेगी नहीं। बच्चों का यह काल कच्चे घड़े व पौधों की भांति ही होता है। इस काल को व्यर्थ यापन करना या करने देना बच्चों के भाग्य से खिलवाड़ ही करना है।

बच्चों को अच्छे संस्कार भी माता-पिता व गुरुजनों से ही मिलते हैं। बच्चों में अच्छे संस्कारों का भी अभाव होता जा रहा है। आज हमारे बच्चे विदेशी संस्कारों को सीखते जा रहे हैं। परिवार के गुणों का अभाव दिखाई देता है, इसमें भी माता का शिक्षा न देना ही कारण है। हमारे बच्चे माता-पिता न सीखकर डैडी-मम्मी, अंकल-आंटी आदि सीख रहे हैं। कोई बाहर से आने वाला यदि घर आकर पूछने लगे-''बच्चे तुम्हारी माता जी घर में हैं, या नहीं, तो बच्चे उत्तर देते हैं आप मम्मी से पूछ लो मुझे नहीं पता।'' यह अवस्था है भारतीय बच्चों की, उनसे आशा करना कि वे भारत माता के प्रति श्रद्धा का स्नेह रखेंगे, अपने माता-पिता का कैसे आदर करेंगे और भविष्य में माता-पिता की बात भी कैसे सुन पायेंगे। अत: अपने तथा पारिवारिक जनों को सुखमय तथा राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करने के लिए हमें सजग होकर ही बच्चों पर विशेष ध्यान् देना चाहिए। हमारे क्रान्तिकारी महर्षि ने जो संदेश दिया है, उसकी उपेक्षा करने से हमारा भविष्य अन्धकारमय बनता जा रहा है। क्या भारतीय संस्कृति पर श्रद्धा रखने वाले भारतीय आर्य बन्धु उपर्युक्त महर्षि के लेख पर ध्यान् देंगे। भौतिक-धन की अपेक्षा अपने राष्ट्र की धरोहर को सुरक्षित रख पायेंगे।

नववर्ष का हर्ष कब, कैसे और क्यों

❒ श्री उदयनाचार्य

जनवरी-1 का आगमन होते ही छोटे-बड़े, प्रबुद्ध-सामान्य, स्त्री-पुरुष आदि सभी हर्ष-उल्लास के साथ नये वर्ष के स्वागत की तैयारी करते हैं। नये वर्ष की शुभकामनाओं को ज्ञापित करने हेतु चारों ओर बैनर, बोर्ड आदि लगाये जाते हैं। रंगोली, रंगबिरंगी लाईट, फूल-माला आदियों से अलंकरण किये जाते हैं। रात भर जाग कर पुराने वर्ष का अन्तिम क्षण बीतकर नये वर्ष का आदि क्षण उपस्थित होते ही आबालवृद्ध सभी जन नाच गान, आतिशबाजी, बैण्ड-बाजा आदि ध्वनियों से सभी दिशाओं को गूंजायमान करते हुए नये वर्ष का बड़ा स्वागत करते हैं और अपरिमित आनन्द का अनुभव करते हैं।

हे भारत माता के मानस वीर सपूतों! क्या यह जनवरी 1 नये वर्ष का आरम्भ है? क्या इसी दिन नये वर्ष का आरम्भ होता है? एक बार गम्भीरता से अपनी अन्तरात्मा में विचार करना। इस समय प्रचलित कालेन्द्र=कालान्तर (कैलेण्डर) ईसा से सम्बन्धित है, यह सर्वविदित है। क्या ईसा से पूर्व अपने भारतदेश का चरित्र, परम्परा, संस्कृति नहीं थी? यदि थी तो ईसा से पूर्व के लोग किस दिन नये वर्ष को मनाते रहे होंगे? यह विचार करना होगा, आत्ममन्थन करना होगा। हम यहाँ केवल प्रमुख विषयों के साथ दिग्दर्शन करा रहे हैं। सुधी पाठकवृन्द स्वयं विचार कर निर्णय लें और तथ्य (सत्य) को सबके सामने प्रस्तुत करें।

यूरोप देशों में पहले ओलम्पियन संवत्सर प्रचलित था। वही संवत्सर ईसा से 753 वर्ष पूर्व रोमनों का राज्य स्थापित होने के पश्चात् रोमनों के प्रथम राजा रोमलुस के काल में रोमन संवत्सर के रूप में परिवर्तित हो गया। तब उस संवत्सर के केवल इस मास (मार्च से दिसम्बर तक) और 304 दिन ही थे उन मासों के नाम रोमन देवताओं और महाराजाओं के नाम से रखे गये थे। जैसे कि 'मार्स' इस रोमन युद्ध देवता के नाम से 'मार्च' मास, अट्लस देवता की कुमारियाँ ''मलिका मई और मलिका जौन'' के नामों से क्रमशः 'मई', 'जून' मासों के नाम रखे गये। रोमन सम्राट, 'जूलियस सीजर' एवं उनके पौत्र 'आगस्टस सीजर' के नामों से 'जुलाई' और 'अगस्त' मास प्रचलित किये गये। इस प्रकार प्रथम मास मार्च से छठे मास अगस्त तक के मासों का नामकरण सम्पन्न हुआ। उनके पश्चात् के मास क्रम-बोधक शब्दों से प्रसिद्ध किये गये। जैसे कि सप्तम (सातवां) मास का नाम सेप्टम्बर (September), अष्टम (आठवां) मास का नाम अक्टूबर (October), नवम (नौवां) मास का नाम नवम्बर (November), दशम (दसवाँ) मास का नाम दिसम्बर (December) रखा गया। यहाँ यह ध्यातव्य है कि सेप्टम्बर आदि शब्द सप्तमादि संस्कृत शब्दों के विकृत रूप हैं। सप्तम अम्बर (=नौवां आकाश) से नवम्बर और दशम अम्बर से दिसम्बर (दशम्बर) शब्द बना। सप्तमाम्बर आदि शब्द आकाशस्थ नक्षत्रादियों की विशेष अवस्थाओं के बोधक हैं।

ये मार्च आदि दस मास ही 53 वर्षों तक व्यवहृत होते रहे। ईसा से 700 वर्ष पूर्व रोमनों का द्वितीय राजा ''नूमा पोम्पिलियस (Numa Pompilius)'' ने 'जोनस' नामक रोमन देवता के नाम से जनवरी (January) मास आरम्भ किया, साथ में फरबरी (February) मास को भी आरम्भ किया, जिसका अर्थ है 'प्रायश्चित मास'। पांचवा रोमन सम्राट' एत्रुस्कान ताक्विनियूस प्रिस्कियूस' (Etruscan Tarquinius Priscius 616-579 ईसा पूर्व) ने रोमन रिपब्लिकन् कैलेण्डर मुद्रित किया था, जिसमें जनवरी को प्रथम स्थान दिया गया था। इन दो मासों को दसवें मास दिसम्बर के बाद जोड़ा जाता तो बुद्धिमत्ता का परिचायक होतां परन्तु इन्हें आदि में जोड़ने से सातवां मास सेप्टम्बर नौवां मास हो गया, वैसे ही आठवां मास ओक्टोबर दसवाँ, नौवां मास नवम्बर ग्यारहवां एवं दसवां मास दिसम्बर बारहवां मास हो गया। जिससे सेप्टम्बर (सप्तम अम्बर=सातवां आकाश) आदियों के अर्थ निरर्थक सिद्ध हुए। अंग्रेजी में 'मार्च' का अर्थ है-'गमन-आगमन' अर्थात् पुराना संवत्सर व्यतीत होकर नया संवत्सर आ गया है। यह अर्थ भी जनवरी, फरवरी मासों को आदि में जोड़ने से व्यर्थ हो गया। अज्ञानता एवं अविवेकता के लिए यह एक ज्वलन्त उदाहरण है। साथ में यहां यह भी विचार करना होगा कि फरवरी मास में 28 या 29 ही दिन क्यों? काल गणना में यदि कहीं कम-ज्यादा हो जाता है तो, न्यूनता रह जाती है तो उसकी पूर्ति अन्त में की जानी चाहिए, फरवरी मास यदि अन्त में रहता तो संवत्सर भर की न्यूनता को पूर्ण करने के लिए 28 या 29 दिन रखे गये हैं, ऐसा समझ में आता और फरवरी का अर्थ (प्रायश्चित) भी सार्थक होता। पर संवत्सर के बीच में अर्थात् दूसरे मास में न्यूनता की पूर्ति (Adjustment) करना कहां की बुद्धिमत्ता है? इससे स्पष्ट है कि जनवरी एवं फरवरी दोनों मास दिसम्बर के बाद ही जोड़ने योग्य हैं, न कि मार्च के आदि में।

भारतीय प्राचीन परम्परा के अनुसार नया संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आरम्भ होता है। जो कि मार्च के अन्त में या अप्रैल के आदि में आता रहता है। इससे ज्ञात होता है कि मार्च-25 से वर्ष को आरम्भ करने की रोमन परम्परा एवं भारतीय परम्परा में अत्यन्त समानता है। मार्च से संवत्सर को आरम्भ करना भारतीय संस्कृति का अनुकरण होता है। अतः अपने क्रैस्तव सम्प्रदाय को वैदिक संस्कृति से अलग करने के दुरुद्देश्य से रोमन सम्राट नूमा पोम्पिलियस् ने जनवरी और फरवरी मासों को मार्च से पूर्व जोड़ा है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई समुचित कारण नहीं है। उससे रोमन संवत्सर 304 दिन के स्थान पर (304+31+28=)363 दिन में रूपान्तरित हो गया। इनमें कुछ मास 30 दिन, कुछ 31 दिन तथा फरवरी मास 28 या 29 दिन के रूप में विभक्त हैं। जूलियस् सीजर और आगस्टस् सीजर के नामों वाले जुलाई एवं अगस्त मासों को क्रमशः 31-31 दिन के रूप में विभक्त किये गये। इस प्रकार यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि संवत्सर का आद्य दिन, मासों का विभाग, परिमाण, नाम एवं क्रम ये सब स्वार्थवश वा अन्य दुरुद्देश्य के कारण अपने मतोन्माद से समाज पर बलात् थोपे गये हैं।

रोमन कैलैण्डर के बारह महिनों के नाम व परिणाम इस प्रकार थे

Januarius (31) Februarius (28.29) Martius (31) Aprillis (30) Maius (31) Junius (30) Quinctilis (31) Sextilis (30) September (30) October (31) November (30) December (31)

ईसा से 44 वर्ष पूर्व जूलियस् सीजर (Julius Caesar) के सम्मान में Quinctilis मास के नाम को Julius (July) के रूप में परिवर्तित किया गया। ईसा से आठ वर्ष पूर्व सम्राट् अगस्टस् सीजन ने स्वयं ही Sextilis मास के नाम को अपने नाम से अर्थात् Augustus (August) नाम से

हे भारत माता के मानस वीर सपूतों! क्या यह जनवरी 1 नये वर्ष का आरम्भ है? भारतीय प्राचीन परम्परा के अनुसार नया संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आरम्भ होता है। जो कि मार्च के अन्त में या अप्रैल के आदि में आता रहता है।

प्रसिद्ध कर दिया। पहले Sextilis मास में तीस ही दिन थे, पर अपने नामवाला मास जूलियस् सीजर के नाम से प्रसिद्ध मास Julius (July) के समान रहना चाहिए, ऐसा विचार कर तीस दिन के बदले में August को एकत्तीस दिन का बना दिया। इस एक दिन के आधिक्य को फरवरी मास में एक दिन घटाकर 29 दिन के बदले में 28 दिन कर दिया। इस कैलेण्डर के कुछ दोषों को दूर कर 'पोप ग्रेगरी' ने एक विनूतन कैलेण्डर को प्रकाशित किया। यही कैलेण्डर सन् 1582 से कुछ प्रमुख देशों में अपनाया गया। यह ग्रेगारियन् कैलेण्डर किस-किस देश में कब-कब अपनाया गया था, इसका स्पष्टीकरण निम्नप्रकार है-

संवत्सर (ईस्वी सन्) देशों के नाम-1582-फ्रांस, इटली, लक्सेम्बर्ग पुर्तगाल, स्पेन। 1583-1812-स्विट्जलैंण्ड। 1584-जर्मन (रोमन कैथोलिक), बेल्जियम और नेदलैंण्ड के कुछ प्रान्तों में। 1587-हांगरी। 1699-1700-डेन्मार्क, डच्, जर्मन प्रोटेस्टण्ट। 1776-जर्मनी। 1752-ब्रिटेन, अमेरिका। 1753-स्वेडेन। 1873, 1874-जापान, मिस्त्र। 1912-1917-अल्बानिया, बुल्गारिया, चीन, एस्तोनिया, लातविया, लिथुअनिया, रोमनिया, तुर्की, युगोस्लाविया। 1918, 1923-सोवियत रूप, ग्रीस।

भूगोल और खगोल के विज्ञान से, प्राकृतिक घटनाओं से, सूर्य-चन्द्र-ग्रह-नक्षत्रों की स्थितियों से ग्रेगारियन कैलेण्डर के मासों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं दीखता। इसलिए जनवरी और फरवरी मासों को मार्च से पूर्व जोड़ने पर भी जनवरी-1 को संवत्सरादिके रूप में लोगों ने नहीं स्वीकारा। मार्च 25 को ही संवत्सरादि अर्थात् नये वर्ष के रूप में मानते हुए आये हैं। सन् 1582 से जनवरी 1 नये वर्ष के रूप में व्यवहार में आया, उससे पूर्व नहीं।

जनवरी-1 को नये वर्ष के रूप में मनाने की पद्धति को अंग्रेजियों ने भारत में भी सन् 1752 में आरम्भ करवाया। भारतीय परम्परा को नष्ट करने के लिए बहुत से षडयन्त्र करने पर भी वित्तसंवत्सर (Financial Year) और शिक्षा संवत्सर (Educational Year) आज तक अप्रैल-1 से ही आरम्भ होते हैं। इन्हें बदल नहीं पाये। ये दोनों ही संवत्सर भारतीय नये संवत्सर के अनुकूल हैं, साथ में वैज्ञानिक और बुद्धिसंगत हैं। पर अप्रैल-1 का मूर्खदिवस (Foolish Day) के रूप में प्रचलन कराया गया। इसका कारण यह है कि-सन् 1582 में फ्रांस के दसवें राजा 'चार्ल्स' ने अपने देश में जनवरी-1 को संवत्सरादि के रूप में घोषणा की, पर वहां की जनता राजाज्ञा को स्वीकार न कर अप्रैल-1 को ही नया संवत्सर मनाती रही। इससे क्रुद्ध चार्ल्स ने राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाले सभी को मूर्ख घोषित किया। उसके बाद धीरे-धीरे वहाँ की जनता को जनवरी-1 को संवत्सरादि के रूप में मानना पड़ा। इस सफलता को देखकर, पुनः भविष्य में कोई भी अप्रैल-1 को नया वर्ष न मनावें, इस उद्देश्य से चार्ल्स ने अप्रैल-1 को मूर्खदिवस के रूप में घोषणा करवाई। हम भारतीय इस सच्चाई को न जानते हुए जन्मान्धों के समान भेड़ चाल से उनका अनुकरण करते जा रहे हैं और विना किसी राजाज्ञा के ही खुशी से, आनन्द से दूसरे को अप्रैल-फूल (मूर्ख) बनाते जा रहे हैं।

दिन का प्रारम्भ आधी रात को नहीं, अपितु सूर्योदय से तीन घण्टे पूर्व (3 A.M.) होता है। उसी समय पशु-पक्षी आदि जागकर अपने-अपने मधुर ध्वनियों से सभी दिशाओं को मनोहर एवं श्रव्य बनाते हैं। उसी समय को ब्रह्ममुहूर्त कहते हैं। उसी समय सम्पूर्ण संसार में सक्रियता, क्रियाशीलता दिखाई देती है। प्राणियों के शरीरों में भी उसी समय एक विशिष्ट चैतन्य का संचार होता है। हम सुनते आये हैं और आयुर्वेदादि शास्त्र भी कहते हैं कि सभी मनुष्यों को इसी ब्रह्ममुहूर्त में जागना चाहिए। इस प्रकार यह जड़ जगत्, पशु-पक्षी, मनुष्यों का अनुभव एवं शास्त्र यह प्रकट कर रहें कि ब्रह्ममुहूर्त से दिन आरम्भ होता है। पर इसके विपरीत आधी रात को दिन का आरम्भ वा संवत्सर का आरम्भ मानना क्या अज्ञानता का प्रतीक नहीं है? मेधा सम्पन्न भारतीयों को पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण कर पशु-पक्षियों से हीन अज्ञानियों के जैसा व्यवहार करना शोभा नहीं देता। अग्नि व दीपकों को प्रज्वलित कर प्रकाश से प्रसन्न होकर अलौकिक आनन्दानुभूति करने की संस्कृति है हमारी। पर दीपकों को बुझाकर अन्धकार से प्रीति करने की सभ्यता है पाश्चात्यों की। चारों ओर घनघोर अन्धकार से आच्छादित आधी रात को मनुष्य ही नहीं, अपितु पशु-पक्षी आदि भी गहरी नींद में रहते हैं। कहीं भी चेतनता, क्रियाशीलता नहीं दिखती। ऐसे समय में वर्ष व दिन का आरम्भ मानना अज्ञान एवं विवेकता है, विज्ञान के विरूद्ध है। मध्यरात्रि से दिन आरम्भ होने का वर्णन किसी भी शास्त्र में नहीं है। अतः भारतमाता के हे वीर सपूतों जागो, सचेत हो जाओ, विचार करो।

❑ जो मनुष्य अधर्म को छोड़कर सब प्रकार से धर्म का आचरण करता है। उसके लिए संसार के सभी पदार्थ सरलता से प्राप्त हो जाते हैं और धर्म का आचरण करने से वास्तविक सुख प्राप्त होता है और मोक्ष मार्ग का पथिक बन जाता है।

-स्वामी दयानन्द

❑ पृथ्वी पर सबसे पहले मनुष्य तिब्बत में उत्पन्न हुआ। आर्य लोग भारतवर्ष में बाहर से नहीं आए थे। आर्य (हिन्दू) लोग भारत के ही मूल निवासी है।

-स्वामी दयानन्द

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी **बोधोत्सव 28 फरवरी एवं 01 मार्च 2022** को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 31 जनवरी 2022 तक भिजवाकर कृतार्थ करे। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य एवम् अन्य उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हो। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पुष्ठों से अधिक न हो तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल **tankarasamachar@gmail.com** पर "वॉकमेन चाणक्य" टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय, सम्पादक टंकारा समाचार, चलभाष 9810035658

सम्पादकीय कार्यालयः ई-227 ए, ग्रेटर कैलाश II, नई दिल्ली-110048

नारी अस्मिता

❒ डॉ. धर्मवीर सेठी

मैं अपना आलेख मनुस्मृति के अधोलिखित श्लोक से आरम्भ करना चाहता हूं जो समस्त नारी जाति के सम्बन्ध में अति समीचीन है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ये रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रऽफला: क्रिया॥3/56॥

भावार्थ: जिस गृहस्थ, जिस समाज, जिस राष्ट्र में नारी जाति का पूर्ण-रूपेण आदर सत्कार एवं सम्मान होता है, उस गृहस्थ, समाज और राष्ट्र पर सभी देवी-देवताओं का वरद-हस्त रहता है अर्थात् वहां शान्ति और प्रगति का माहौल बना रहता है और जहां मातृ-तुल्य नारी का अनादर होता है, वहां किसी प्रकार का शुभ-लक्षण दिखाई नहीं देता।

हम इस अक्षरश: सत्य-कथन को निरन्तर पढ़ते और सुनते चले आ रहे हैं परन्तु वाह रे मानव: तुम कितने स्वार्थी बन गए हो कि मां की कोख में पलने वाली सन्तति का लिंग जानने के इतने उताबले बन जाते हो कि उसका अल्ट्रा-साऊँड कराने में तुम जरा भी नहीं हिचकिचाते। यदि वह सन्तति पुल्लिंग दिखाई दिखाई दे तो तुम प्रसन्न परन्तु यदि वह स्त्रीलिंग ज्ञात हो तो न जाने तुम पर कितने पहाड़ टूट पड़ते हैं। ऐसा क्यों? क्या तुम्हें प्रसन्नता नहीं होनी चाहिए कि तुम्हारे परिवार में 'लक्ष्मी' आ रही है, एक देवी का आगमन हो रहा है।

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:॥

वह लक्ष्मी हो सकती है, पार्वती हो सकती है, सरस्वती हो सकती है, वीणा-वादिनी हो सकती है। कवि तो, उससे वरदान मांगता है-'वीणा वादिनी वर दे' और तुम! ऐसे कृतहन हो कि प्रभु द्वारा प्रदत्त सन्तति को इसलिए धिक्कारते हो कि वह कन्या है।

याद रखो 'कन्या भ्रूण-हत्या करना के बल पाप ही नहीं, महापाप है, ऐसा अभी हाल में प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा भी काशी में एक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा गया था।

बेटी मारे कोख में, माता पूजन जाए।
किस मुख ऐसी नगर को जननी बोला जाए॥

माता वैष्णो देवी के दर्शन करने जाने से क्या लाभ यदि तुम उसकी सन्तान (पुत्र) की रक्षा नहीं कर सकते। इस लिए ऐसे पूजा स्थलों पर जा कर भक्त और संस्कारवान बनने का ढोंग तो न करो। कन्या भ्रूण हत्या का विषय समाज और राष्ट्र के लिए एक गम्भीर समस्या बनी हुई है क्योंकि इससे लिंगानुपात में असन्तुलन बना रहता है। पुत्र की वाञ्छा करने वाले दम्पति ध्यान दें कि

ओस की बूंद सी होती है बेटियां।
जरा भी दर्द हो तो रोती है बेटियां॥
रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को।
दो-दो कुलों की लाज बचाती है बेटियाँ॥

इसी भाव को आंगल-भाषा में कैसे सार रूप में व्यक्त किया गया है- 'A son is a son till he gets a wife a Daughter is Daughter all her life' क्या पाता वह बेटी बड़ी होकर कल्पना चावला बन अन्तरिक्ष में उड़ान भरती, सायना मिर्जा बन खेल के मैदान में अपना और अपने देश का सम्मान बढ़ाती।

बेटियों की शिक्षा की बात जब चलती है तो दकियानूसी समाज प्राय: यह उदाहरण प्रस्तुत करता है **''स्त्री शूद्रौ न धीयाताम्''** अर्थात् स्त्री और शूद्र को शिक्षा ग्रहण करने और वेदादि पढ़ने का कोई अधिकार नहीं। हमारे समाज की यह कैसी मनोदशा थी कि जो पत्नी (स्त्री) गृहस्थी को चलाने वाली है। वह अनपढ़ रहे। तभी इसका विरोध हुआ। आर्य समाज के पुरोंधा और संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हुंकार भरी और कहा कि स्त्री और पुरुष दोनों को पढ़ने का समान अधिकार है। वेद का मन्त्र कहता है: **'इदं मन्त्रं पत्नी पठेत्'-** इस मन्त्र को यज्ञ के समय पत्नी पढ़े।

ऋषि दयानन्द इसी प्रसंग में शिक्षक-त्रयी की चर्चा करते हैं-**'मातृमान् पितृमानाचार्णवान् पुरुषो वेदं'** (शतपथ ब्राह्मण 14.08.5.2)-सर्वप्रथम शिक्षक माता, तदनन्तर पिता और फिर किसी शिक्षण संस्था (गुरुकुल) के आचार्य की बारी आती है। शिक्षण-त्रयी में माता का स्थान सर्वोपरि कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि महर्षि नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। यदि वह स्वयं शिक्षित नहीं होगी तो बालक को शिक्षित कैसे करेगी? स्त्री शूद्रौ नाधीयातामिति श्रुते:' कहने वालों को ऋषिवर आड़े हाथों लेते हैं'' तुम कुएं में पड़ो और यह श्रुति तुम्हारी कपोल-कल्पना से हुई है, किसी प्रमाणिक ग्रन्थ की नहीं।'' मात्र प्रामाणिक ग्रन्थ वेद में कन्याओं के पढ़ने का प्रमाण उन्होंने अथर्ववेद (11.24.3.18) से प्रस्तुत किया है **''ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्''**। इसलिए जो स्त्री न पढ़े तो कन्याओं की पाठशाला में अध्यापिका क्यों कर हो सके। ऋषि परिचित थे उस युग की विचारधारा से जब नारी की नरक का द्वारा कहा जा रहा था उसकी पदे-पदे भर्त्सना की जाती थी, उसे हेय समझा जाता था। परन्तु खेद है भारतीय समाज भारतर्ष की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी, मैत्रेयी सरीखी विदुषियों को भूला हुआ था। अस्तु! ऋषि ने न केवल नारी जाति की मान-मर्यादा की रक्षा की अपितु राष्ट्र का निर्माण करने वाली उत्तम कोटि की शिक्षिकाओं की आवश्यकता पर भी बल दिया।

सती प्रथा नारी जाति के लिए एक और अभिशाप था। स्वामी दयानन्द के पूर्व राजा राम मोहन राय ने निर्दयी और रूढ़िवादी समाज के द्वारा अपने बड़े भाई जगत् मोहन की मृत्यु के उपरान्त उनकी, पत्नी (अपनी भाभी) को चिंता में जीवित जलाने का, पाषाण हृदय को भी द्रवीभूत करने वाला, दृश्य जब देखा तो वह सिह उठे। राजा राम मोहन राय ने जब यह अमानुषी काम अपनी आंखो से देखा तो विरोध करते हुए सन् 1829 में उन्होंने कानून बनवा कर इस प्रथा का बन्द करवा दिया।

बाल विवाह और विधवा विवाह स्वामी दयानन्द के समय में ऐसे रोग थे जो हिन्दू जाति को शनै:शनै: निर्बल बना रहे थे। स्वामी जी ने बाल विवाह का घोर विरोध किया और विधवा विवाह होना चाहिए। इसकी जमकर वकालत की।

स्त्री जाति की पवित्रता में ही देश की उद्धार तथा नारी जाति के पतन में देश का पतन होना निश्चित है। आधुनिकता की चकाचौंध भरी दौड़ में नारी वर्ग को अधिक सचेत रहने की आवश्यकता है। वस्तुत: स्त्री को पति का अर्धाङ माना है (अर्द्धांगिनी)। उनको घर की स्वामिनी एवं सारे परिवार की निरीक्षिका माना है। उनके पातिव्रत्य को भारतवर्ष का मुख्य उज्जवल करने वाला माना गया है। नारी को अबला एवं निर्बला नारी की मानसिकता से उबर कर साहस एवं संकल्य के साथ स्वावलम्बी

बनना पड़ेगा। स्वावलम्बन से नारी अनेक प्रकार षड्यन्त्रों एवं बन्धनों से निकल सकती है। पुरुष प्रधान समाज में नारी को कई प्रकार की जंजीरों से जकड़ दिया गया है, जिससे उसकी मानसिकता भी कुछ उसी प्रकार की हो गई है। सत्य तो रहा है कि समय ने करवट ली है और बदलते हुए परिवेश में नारी को एक खुला एवं स्वतन्त्र आसमान मिला है जहां वह अपनी आर्थिक निर्भरता के साथ आन्तरिक और बाह्य विकास कर सकती है। ऐसे समय में नारी को अपनी सूझ-बूझ एवं विवेक से आने वाली चुनौतियों का सामना करना चाहिए क्योंकि उसके सामने चुनौतियां कम नहीं है। इस सम्बन्ध में प्राय: नारी सशक्तिकरण की चर्चा आजकल अधिक होती है। सशक्तिकरण शब्द एक तुलनात्मक शब्द है, इसलिए इसे परिभाषित नहीं किया जा सकता। देवसुर संग्राम में असुरो को परास्त करने के लिए देवताओं को भी नारी के दुर्गा रूप की आवश्यकता पड़ती है। दुर्गा ही समय पर चंडी, काली, महाकाली बन असुरों का बध करके देवताओं को अच्छी स्वतन्त्रता बहाल करती रही।

समाज के निर्माण में स्त्री का योगदान सराहनीय रहा है क्योंकि नारी किसी भी तरह पुरुष से कम नहीं है बल्कि ईश्वर ने दोनों को एक दूसरे का पूरक बनाया है न कि प्रतिद्वन्दी। फिर भी आधुनिक परिवेश में शायद स्त्री की सामंती मानसिकता देखने को मिलती है। परन्तु नारी सशक्तिकरण की गलत दिशा के कारण पूरे समाज तथा मानवीय मूल्यों का अशक्तिकरण हो रहा है। जिसका परिणाम शायद अच्छा न हो। अस्तु! नारी सशक्तिकरण की दिशा ऐसी होनी चाहिए कि घर बचा रहे, नारी और पुरुष के बीच के सम्बन्ध मैकेन्किल न हों। इस आलेख का समापन एक कवि की इन पंक्तियों से करना चाहूंगा।

तुम जननी नहीं हो केवल मेरे पार्थिव शरीर की ही,
हो रचयिता मेरे भाव जगता के उस चिन्मय स्वरूप की भी।
जिसकी जागृति पर होता है मनुष्य को उत्तम साक्षात्कार
और व्यक्ति बन जाता है नर से नारायण
शुचिता, पवित्रता, स्नेह का आगार हो तुम
वात्सल्य का मूर्तिमंत स्वरूप हो तुम
इसीलिए पूजित हो, वन्दित हो, अभिनंदित हो।

– वरेण्यम्, ए-1055, सुशान्त लोक-1, गुड़गांव

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2021

के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए
इंटरनेट के माध्यम से
www.facebook.com/ajaytankarawala
पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके। **वर्तमान में अच्छी गाय 75000/- रूपये के लगभग प्राप्त हो रही है।**

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 25,000/- रुपये गाय की खरीद हेतु सहयोग राशि भेज रहे है। 3 सहयोगी प्राप्त होते ही गाय खरीदी जाती है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गर्म वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक:- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **अजय सहगल** (मन्त्री)

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मत में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 12000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक:- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **अजय सहगल** (मन्त्री)

महात्मा आनन्द स्वामी की पुस्तकों से कुछ अमूल्य बातें

बर्थ डे तो मनाये पर साथ ही जीवन की बैलेन्स शीट भी बनायें।

सागर में मिलने वाले नदियों का पानी कभी भी स्रोत की और वापिस जाते नहीं देखा गया, वैसे ही हमारी आयु के जो दिन बीत जाते हैं, कभी बापिस नहीं आते। बर्थ डे तो मनायें, जश्न भी करें पर साथ ही अपने जीवन की हिसाब किताब भी करें। बैलेन्स शीट भी बनायें। एकान्त में बैठकर सोचो कि जिस उद्देश्य के लिए यह मानव शरीर मिला था, वह उद्देश्य कितना पूरा हुआ और कितना शेष है। यदि उतना पूरा नहीं हुआ जितना होना चाहिए था, तो दृढ़ संकल्प करो कि आगामी वर्ष में इस घाटे को पूरा करेंगे। उद्देश्य पूर्ती का एक ही साधन है, प्रतिदिन कम-से-कम एक घंटा आत्म चिन्तन और प्रभु चिन्तन् करो।

चीं-पी की चिन्ता छोड़ प्रभु में ध्यान लगायें।

एक बूढ़ी माता जी मेरे पास आई और बोली, स्वामी जी मैं ध्यान् में बैठती हूं किन्तु ध्यान लगता नहीं। मैंने पूछा क्यों नहीं लगता? तो वह बोली-''घर में बच्चे हैं, पोत पोतियां हैं उनकी चीं पीं समाप्त नहीं होती।

मैने हंसते हुए कहा-''परिवार में बच्चे होना तो अच्छा है, जिस घर में बच्चे नहीं होते वहां तो सन्नाटा छाया रहता है। उनकी चीं-पीं में ही अपना भजन करो। वह विश्वस्त नहीं दिखी तो मैंने उसे एक कहानी सुनाई।

एक था घोड़े वाला। उसका घोड़ा चीं पीं की ध्वनि से बहुत बिदकता था। एक दिन घोड़े को पानी पिलाने के लिए एक कूएं पर ले गया जहां रहट की चीं पीं की आवाज आ रही थी। घोड़े वाला इस डर से कि घोड़ा विदकेगा, यह सोच रहा था कि जब रहट बन्द होगा तब पानी पिलाउंगा।

तभी कुंए वाले ने पूछा-तुम घोड़े को पानी क्यों नहीं पिलाते?

घोड़े वाला बोला जब चीं पीं बन्द हो जाये तभी पिलाउंगा। कूएं वाला हंस कर बोला-जब रहट चलेगा तो चीं पी. होगी ही। यह रहट बन्द हो गया तो पानी भी बन्द हो जायेगा।

इसलिए इस चीं पीं की चिन्ता छोड़ ध्यान लगाने बैठो। चीं पीं होती भी है तो होने दो। तुम्हारे मन में अगर प्रभु का प्रेम है तो इस चीं पीं के होते हुए भी तुम्हारा ध्यान लगेगा।

संसारिक व्यक्ति के लिए योगाभ्यास क्यों आवश्यक है?

इस का उत्तर महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका में इस तरह दिया है। योगी और संसारिक मनुष्य जब संसारिक कामों में संलग्न होते है तो योगी का मन सदा सुख दु:ख से उपर उठ कर, आनन्द में प्रकाशित होकर, उत्साह और मस्ती में भरा रहता है। इसके विपरीत संसारिक व्यक्ति, जिसने योगाभ्यास नहीं किया होता, दुख और असफलता में बहुत दु:खी हो जाता हैं, और सुख और सफलता में बहुत खुश। कहने का अर्थ है योगी संसारिक वृत्तियों से उपर उठ चुका होता है। जबकि संसारिक व्यक्ति वृत्तियों से उपर उठ चुका होता हैं। जबकि संसारिक व्यक्ति वृत्तियों का दास होने की वजह से अंधकार में फंस कर दु:खी रहता है। क्योंकि इस संसार में रहते हुए ऊँच-नीच, सुख-दुख, रोग-स्वास्थ्य, समस्याएं-उलझने तो सब कुछ लगा रहना ही है, इसलिए संसारिक व्यक्ति के लिए योगाभ्यास, 'ध्यान' जिस का मुख्य अंग है बहुत आवश्यक है। योंगी ध्यान द्वारा यह मालूम कर लेता है कि क्या उसके लिए ठीक है क्या गलत यदि गलत मार्ग पर चला भी जाये तो ध्यान द्वारा यह मालूम होने पर कि यह गलत है, उसको छोड़ देता है। जब कि जो योगी नहीं होता वह इस सोच में चिन्तित रहता है कि क्या करूं।

ऋषि, देवता या महात्मा कौन है?

ऋषि, देवता या महात्मा उनको कहा जाता है जो दूसरों का हित चाहने वाले हों। दूसरों के सुख, कल्याण के लिए बिना इसकी परवाह किए कि दूसरे उसके लिए क्या कर रहे हैं, चाहे कांटे ही विछा रहे हों, लगे रहते हैं। ऋषि, देवता या महात्मा उस बृक्ष की तरह होते हैं जो कि उस की टहनी को काटने वाले को भी छाया प्रदान करता है।

वृक्ष जैसे अपना फल आप नहीं खाते, नदियां अपना पानी स्वयं नहीं पीती, ऐसे ही देवता वह है, जो दूसरों के लिए जीता है। आवश्यकता पड़े तो दूसरों के लिए प्राण भी दे देता है।

दयानन्द की बात अलग थी

❒ **ऋषि राम कुमार**

जीवन जीने सब आते हैं
खाते पीते चले जाते हैं
उसके जीने की बात अलग थी-दयानन्द की बात अलग थी।
जीवन जीने की कला बताई
सच्चाई की राह दिखाई
उसके चेहरे की बात अलग थी-दयानन्द की बात अलग थी।
नारी को सम्मान दिलाया
पढ़ाना इनको मान बताया
जात-पात की बात अलग थी--दयानन्द की बात अलग थी।
ओ३म नाम का दिया जलाया
हवा में भी बुझने न पाया
इस दिये की बात अलग थी-दयानन्द की बात अलग थी।
पंडों को हड़काया ऋषि ने
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाया ऋषि ने
गायत्री मन्त्र की बात अलग थी--दयानन्द की बात अलग थी।
आडम्बर को भगाया ऋषि ने
गौ हत्या रूकवाया ऋषि ने
ऋषि निर्वाण की बात अलग थी

- 246/4, मॉडल टाऊन, गुड़गांव (हरियाणा)-122001

❑ उस मनुष्य का जीवन सफल है जो दूसरों से अपने दोषों को सुनकर क्रोध नहीं करे। दोष बताने वाले का उपकार माने कि जिससे दोष सुनने वाला मनुष्य अपने दोषों को दूर करके पाप करने से बचे। **-स्वामी दयानन्द**

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0015300 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर (80जी) से मुक्त है।**

टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय 20,000/- रुपये देवें

❑❑❑

गौ-दान : महा-दान–उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था हेतु एक गऊदान करें अथवा 75,000/- रुपये की सहयोग राशि गऊ हेतु देवें। (तीन व्यक्ति मिलकर भी 25,000/- प्रति व्यक्ति भी दे सकते है।)

❑❑❑

गऊ पालन एवं पोषण हेतु 12,000/- रुपये का हरा चारा एवं पौष्टिक आहार की व्यवस्था (एक गऊ का वार्षिक व्यय)

❑❑❑

1000/- रुपये की सहयोग राशि देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि के सहयोगी सदस्य बनें। यह राशि आपको प्रतिवर्ष देनी होगी। इसलिए अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें। जो दान देवें उसके अतिरिक्त यह 1000/- रूपये राशि अवश्य देवें।

❑❑❑

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की बेटियों द्वारा बनाए गए सामान को क्रय करके सहयोग कर सकते हैं।

❑❑❑

ब्रह्मचारियों के एक सत्र का भोजन 20,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर।

❑❑❑

ऋषि बोधोत्सव पर 1,50,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर एक सत्र के भोजन में सहयोग

❑❑❑

20,000/- रुपये की सहयोग राशि प्रति वर्ष किसी एक दिन का (जन्मदिवस अथवा स्मृति दिवस) ब्रह्मचारियों का भोजन देकर सहयोग कर सकते है।

❑❑❑

ब्रह्मचारियों के पहनने हेतु सफेद कपड़ा एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं देकर

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

–: निवेदक :–

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान

शिवराजवती आर्य
उपप्रधाना

अजय सहगल
मन्त्री

उपकार्यालय : आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क: 09560688950, 23360059

टंकारा ट्रस्ट के कार्यकारी प्रधान
श्री योगेश मुंजाल डाक्ट्रैट की उपाधि से अलंकृत

टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी एवं कार्यकारी प्रधान श्री योगेश मुंजाल जी सुपुत्र स्व. महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जोकि एक सुप्रसिद्ध उद्योग प्रबन्धक एंव गुरूग्राम इण्डस्ट्री एसोसिएशन के पूर्व प्रधान एवं मुंजाल शोवा लिमिटेड के प्रबन्ध निदेशक हैं, को रविन्द्र नाथ टैगोर यूनिवर्सिटी द्वारा डाक्ट्रैट की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया।

विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल द्वारा श्री मुंजाल जी को डाक्ट्रैट की उपाधि से विभूषित किया गया। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल जी द्वारा श्री योगेश मुंजाल को सामाजिक औद्योगिक एवं अर्थ व्यवस्था में किए गए कार्यो की सराहना करते हुए कहा कि आपकी उपलब्धियाँ केवल मात्र आपका आर्य समाज और वैदिक मान्यताओं से जुड़े होने एवं अपने माता पिता द्वारा दिए गए संस्कारों के कारण ही है।

आप आई.आई.टी. रूड़की के स्नातक हैं। औद्यागिक उपलब्धियों के साथ साथ आप रोटरी क्लब, सीआईआई, क्वालिटी सर्किल, फोरम ऑफ इण्डिया, एआईएमए, इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, एसोसियेशन ऑफ नीट, डी.ए.वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति/ट्रस्ट, वैदिक साधन आश्रम देहरादून, महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा आदि सामाजिक एवं राष्ट्रीय संस्थानों से जुड़े हुए हैं।

ईश्वर का नया पता

हम सभी ने अपने-अपने तरीके से ईश्वर के घर बना रखे हैं। हमारे पास मन्दिर हैं, मस्जिद हैं, गुरुद्वारे हैं और चर्च हैं। आज हम ईश्वर के एक ऐसे नए घर का पता जानने जा रहे हैं, जिसे ज्यादातर लोग भूल गए हैं। ईश्वर के इस घर के पते को एक शायर ने इन खूबसूरत शब्दों को संजोया है।

अपना गम लेकर कहीं दूर न जाया जाए,
घर में बिखरी हुई चीजों को सजाया जाए।
घर से मन्दिर है बहुत दूर चलो क्यो यूँ कर लें,
किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाए।

क्या खूब सुहानी बात कही है कवि ने। मित्रों, यहाँ बच्चों से मतलब है- बच्चे की तरह सीधे-सादे और सरल मन् से। यह एक ऐसा भोला और कोरा मन् होता है, जिसमें न तो ईर्ष्या होती है और न ही प्रतिशोध। यह जिज्ञासु मन होता है, जो ज्यादा से ज्यादा जानना चाहता है। यह उत्साह, उमंग और ऊर्जा से भरा मन् होता है, जो दु:ख जानता ही नहीं। यह हमेशा खुश रहने वाला मन होता है।

जाहिर है मित्रों कि हम आप बच्चे तो नहीं बन सकते, लेकिन बच्चे जैसा तो बन ही सकते हैं। हम अपने शरीर को बच्चे जैसा नहीं बना सकते, लेकिन अपने मन् को तो बना ही सकते हैं और बस, जैसे ही हम ऐसा कर लेते हैं, खुद को ही ईश्वर का घर बना लेते हैं। अब हमें बाहर कहीं जाने की जरूरत नहीं रह जाती।

ईश्वर का निवास बालमन में होता है। ❑ संकीर्णताओं से मुक्त बालमन होता है। ❑ जो बच्चों जैसा होगा, वह हमेशा ही उल्लास और उमंग से भरा हुआ होगा। ❑ जानने की चाह बालमन के होने का प्रमाण है।

- साभार: लाईफ मन्त्रा पुस्तक

एक प्रेरणा परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं
अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 110 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज की आवश्यकता है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी। **एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 20,000/- रुपये है।** आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदक:- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **अजय सहगल** (मन्त्री)

વેદજ્ઞાન અને વેદની સાત મર્યાદાઓ

રામમહેતા – ટંકારા

સમસ્ત સંસારના બધા જ પુસ્તકાલયોમાં 'વેદ' જ એકમાત્ર એવો ગ્રંથ છે, જે અત્યન્ત પ્રાચીન અને સાર્વભૌમ સ્વીકાર્ય છે. આજ ગ્રંથમાં સંસારની મોટાભાગની સમસ્યાઓનું સમાધાન મળી જાય છે. આજ કારણે મનુ મહારાજ જેવા ધર્મશીલથી માંડીને મહર્ષિ જૈમિનિ જેવા મીમાંસક સુધીના તથા આધુનિક પૌર્વાત્ય તેમજ પશ્ચિમી વિદ્વાનો જેવા બધાં જ વિદ્વાનો, વિચારકો વેદ માટે અત્યન્ત શ્રદ્ધા રાખે છે. વેદ ઈશ્વરીય જ્ઞાન હોવાના પ્રબળ પ્રમાણો છે. કે સૃષ્ટિના આદિકાળમાં ઈશ્વરે માનવમાત્રના કલ્યાણ માટે ચાર ઋષિઓના અન્તઃકરણમાં વેદનું જ્ઞાન પ્રગટ કર્યું તથા એ ચાર ઋષિઓમાં અગ્નિ, વાયુ, આદિત્ય અને અંગિરાએ વેદજ્ઞાન સાંભળ્યું, એટલે જ વેદના મંત્રોને શ્રુતિ પણ કહેવામાં આવે છે. વેદનું જ્ઞાન ક્યારેય નષ્ટ નથી થતું, ન તો કોઈ એનો નાશ કરી સકે એમ છે કારણ કે જ્યારે સૃષ્ટિ પ્રલય અવસ્થામાં હોય છે ત્યારે વેદજ્ઞાન બીજ રૂપે પરમેશ્વરના ગર્ભમાં વિદ્યમાન રહે છે અને જ્યારે સૃષ્ટિનો ફરીથી પ્રાદુર્ભાવ થાય છે ત્યારે ફરીથી ઋષિઓના અન્તઃકરણમાં વેદ-જ્ઞાન પ્રગટ થાય છે.

સાયણાચાર્ય અને સ્વામી દયાનન્દ સરસ્વતી બંને માને છે કે વેદોનો આવિર્ભાવ ચાર ઋષિઓ દ્વારા થયો છે. સાયણાચાર્યે ઐતરેય બ્રાહ્મણનું ઉદાહરણ આપીને લખ્યું છે –जीव विशेषरग्निवाय्यवादित्यै र्वेदानामुत्पादितत्वात् ऋग्वेद एवाग्नेरजायत यजुर्वेदो वायोः सामवेद आदित्यात् इति।। (ऐतरेय - 5-32)

આવી જ રીતે સ્વામી દયાનન્દે પોતાના ગ્રન્થ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका માં વેદની ઉત્પત્તિના વિષમાં લખ્યું છે – ચારે વેદ ચાર ઋષિઓ દ્વારા પ્રાદુર્ભૂત થયા. પ્રશ્નઃ કયા? उत्तरः अग्नि, वाय्यादिव्यांगिरसाम्। सृष्ट्यादौ मनुष्यदेहधारिणस्ते ह्रासन्। અર્થાત્ પરમપિતા પરમાત્માએ જ્યારે કૃપા કરી તો સૃષ્ટિની આદિમાં અગ્નિને ઋગ્વેદ, વાયુને યજુર્વેદ, આદિત્ય નામના ઋષિને સામવેદ અને અંગિરા ઋષિને અથર્વવેદનું જ્ઞાન આપ્યું. સૃષ્ટિની આદિમાં અગ્નિ અને બીજા દેહધારી મનુષ્ય હતા.

વૈદિક વિદ્વાનોનું માનવું છે કે વેદોના સર્વત્ર આધ્યાત્મિક જ્ઞાનની સાથે સાથે યત્ર-તત્ર સામાજિક, ભૌતિક, નૈતિક, વ્યાવહારિક, રાષ્ટ્રીય અને ચિકિત્સાદિ વિષયક જ્ઞાનનું વિસ્તારપૂર્વક વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. વેદના મનીષિઓનું તો ત્યાં સુધી કહેવું છે કે પ્રત્યેક મન્ત્રમાં કોઈ ને કોઈ પ્રકારે બ્રહ્મજ્ઞાન તથા અધ્યાત્મવિદ્યાનું જ વર્ણન છે. વિવેકશીલ વિદ્વાનોનું તો ત્યા સુધી કહેવું છે કે આ જગતમાં સંજીવની શક્તિ સૂર્યમાંથી જ નિકળી છે તો સંસારમાં માનવીય સભ્યતા વેદમાંથી આવી છે.

વિસ્તારભયના કારણે વધારે કંઈ ન કહેતા હવે વેદની સાત મર્યાદાઓની ચર્ચા કરીશું. વેદમાં પ્રકારે સાત મર્યાદાઓનો નિર્દેશ છે, - सप्त मर्यादा कवयस्ततक्षुः। तासां एकमिदभ्यं हुरोगात्।।

સર્વશક્તિમાન ઈશ્વરે માનવ જીવનમાં સુખ, શાન્તિ, સમૃદ્ધિ, પ્રગતિ અને મોક્ષ માટે સાત પ્રકારની મર્યાદા અર્થાત્ સીમા-રેખા નિર્ધારિત કરી છે. કહેવાનો અર્થ છે કે જ્ઞાની લોકોએ સભ્યતાની સાત મર્યાદાઓ કહી છે, એમાંથી એકનું પણ ઉલ્લંઘન કરવાથી માણસ પતિત થઈ જાય છે. એ સાત મર્યાદાઓ નીચે મુજબ છે-

1. स्तेयं - ચોરી- 1 કર ચોરી, 2 કર્તવ્ય વિમુખતા, 3 દાણચોરી 4 પોતાની વાતમાંથી ફરી જવું, 5 સદાચરણ નિયમોનું ઉલ્લંઘન 6 બીજાને નીચું બતાવવું 7 આત્મ સમ્માનનો હ્રાસ
2. तल्पारोहन પરસ્ત્રી ગમન
3. ब्रह्म हत्या જ્ઞાનીનો વધ Killing of wise men અર્થાત જ્ઞાનના પ્રચારમાં વિઘ્ન નાખવા, વિદ્વાનનું અપમાન કરવું.
4. भ्रुण हत्या - ગર્ભપાત, વિસ્વાસઘાત, દગો, આદિ.
5. सुरापान - દારૂ કે નશીલા પદાર્થોનું સેવન
6. दुष्कृत्य कर्मणा पुनः पुनः - પાપને સમજવા છતાં વારંવાર કરવું.
7. पातके अनृतोद्यः - અસત્ય બોલવું કે પાપ કરવું અને એને છુપાવવાના પ્રયત્નો કરવા.

એટલે દરેક મનુષ્યે વેદવચનોનું પાલન કરીને કર્મ કરવા તોજ એ પોતાના જીવનને સુખ-સમૃદ્ધિને પ્રાપ્ત કરી શકશે.

दान

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

वेद भगवान जहां मनुष्य मात्र को सैकड़ों हाथों से सात्विक धन ज्ञान आदि कमाने की अनुमति प्रदान करते हैं वहीं संग्रह किए हुए धन ज्ञान आदि को हजारों हाथों से बांटने, दान करने वा त्याग का भी आदेश देते हैं। अथर्ववेद में एक ओर जहां **शतहस्त समाहर**–अथर्ववेद 3/24/5 अर्थात् सैकड़ों हाथों से कमा वहीं **सहस्त्र हस्त संकिर** अर्थात् हजारों हाथों से बांट दे का स्पष्ट निर्देश दिया। जिस प्रकार एक स्थान पर रूका हुआ तालाब का पानी गंदा मैला व दूषित होकर प्रयोग के योग्य नहीं रहता ठीक उसी प्रकार एक व्यक्ति के पास तिजोरी में बंद धन वा बिना उपयोग ज्ञान भी सड़कर बेकार हो जाता है। वहीं दूसरी तरफ निरन्तर प्रवाहमान नदी का जल सदा साफ शुद्ध रहता है उसी प्रकार दान देने से धन और बांटने से ज्ञान की वृद्धि होती है संत कबीर ने भी कहा है–

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी ना घटयो नीर।
दान दिये धन ना घटे, कह गए संत कबीर॥

यहां अक्सर कंजूस लोग तर्क देते हैं बांटने से धन घटता है और धन तो संग्रह से बढ़ता है। परन्तु यह सोच उनके अल्पज्ञान को प्रदर्शित करती है। दान देने से धन की निश्चित वृद्धि होती है क्योंकि धन ऐश्वर्य सुख की प्राप्ति अर्थात् अच्छा प्रारब्ध वा नियति केवल ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में सद्कर्मों के फलस्वरूप होती है। शुभ कार्यों से दान दिया धन एक ऐसा सद्कर्म है जिसके फलस्वरूप कर्ता को निश्चित रूप से अच्छी नियति किस्मत वा धन की प्राप्ति होती है। ज्ञान बांटने से अर्थात् पढ़े हुए पढ़ाने के लिए बार-बार दोहराने से स्मृति में ज्ञान की वृद्धि और शोधन होती है और इस बात को पढ़ाने वाला आसानी से समझ सकता है।

ज्ञान व धन आदि का बांटना दान करना एक किसान द्वारा खेत में बोए गए मुट्ठी भर अनाज की भाँति होता है जो समय आने पर पुरूषार्थ के प्रतिफल प्रारब्ध के रूप में लहलहाती फसल प्रदान कर उसे कई हजार गुणा कर देता है जिस प्रकार देवताओं के मुख अग्नि में यज्ञ हवन के समय आहूत की गई थोड़ी सी औषधि युक्त सामग्री को अग्नि देव विभक्त करके कई हजार गुणा बढ़ाकर पूरे वातावरण में सबके उपयोग के लिए व्याप्त कर देते हैं ठीक उसी प्रकार मनुष्य द्वारा दिया धन ज्ञान आदि का दान कई गुणा बढ़कर उसे प्राप्त हो जाता है।

ईशोपनिषद् में **तेन त्यक्तेन भुंजीथा** के माध्यम से ईश्वर द्वारा प्रदत्त समस्त ऐश्वर्य के त्यागपूर्वक भोग करने की शिक्षा दी गई है अर्थात ईश्वर द्वारा प्रदत्त धन ऐश्वर्य को स्वार्थ, मोह, माया, ममतावश केवल अपना मानकर संग्रह कर लेना तथा उसका त्याग वा उपयोग ना करना मनुष्य के दु:ख कष्ट का कारण बनता है।

वैसे भी ऋग्वेद में मनुष्य को चेतावनी गई है **केवलाघो भवति केवलादी** अर्थात अकेला खाने वाला पाप खाता है इसीलिए कहा गया कि जहाँ मनुष्य को सात्विक धन ज्ञान कमाने की अनुमति है वहीं उसका त्यागपूर्वक भोग अर्थात बांट कर खाने का आदेश है। बांटने वाले दानी का समाज में आदर होती है। वह शत्रुता का नाश कर विरोधियों पर विजय पाता है। दान से शत्रु मित्र बन जाते हैं। भगवान श्री कृष्ण भी कहते हैं **भुंजते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्**। अर्थात् जो पापी लोग अपने शरीर पोषण के लिए कमाते पकाते हैं वह पाप ही खाते हैं। देव दयानन्द तो 'अतिथियज्ञ' और 'बलिवैश्वदेव यज्ञ' के माध्यम से ना केवल विद्वान मनुष्यों अपितु कीट पतंगों पशुओं को भी बांटने खिलाने का निर्देश देते हैं।

दान दानी व बांटने वाले के उच्च स्थान का वर्णन वेदों में अनेकों स्थानों पर आया है।

उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थु:। ऋग्वेद 10/107/2
दानी ऊंचा स्थान वा द्युलोक में परम पद को प्राप्त करते हैं।

दक्षिणानान्प्रथमो हूत एति। ऋग्वेद 10/107/5
दानी को सबसे पहले बुलाया जाता है।

उतो रयि: पृणतो नोप दस्यति। ऋग्वेद 10/117/1
दान का धन ना घटता है और ना ही नष्ट होता है।

चाणक्य महाराज भी बांटकर खाने, त्याग व दान की प्रेरणा देते हुए कहते हैं

उपार्जितानां वित्तानां त्याग एव हि रक्षणम्।

अर्थात् सर्वदा स्वार्थ त्याग और दान की भावना से व्यक्ति समाज और राष्ट्र की रक्षा होती है। मनुष्य को योग्य है कि वह संग्रहीत संचित धन का दान करता रहे।

बांटकर खाने वाले को इंसान और अकेले पेट भरने वाले को पशु बताते हुए पथिक जी ने खूब कहा है–

अकेले ही जो खा खाकर सदा गुजरान करते हैं
यूं भरने को तो दुनिया में पशु भी पेट भरते हैं
पथिक जो बांटकर खाए उसे इंसान कहते हैं॥

ईश्वर प्रदत्त धन ऐश्वर्य ज्ञान उपार्जन उपरांत संग्रह करके स्वार्थ भावना को छोड़ते हुए त्यागपूर्वक उपयोग करते हुए दान भावना से सद्पुरूषों को बांटना चाहिए। इससे मनुष्य के धन ज्ञान में वृद्धि होती है।

–922/28 फरीदाबाद, प्रधान, आर्य केंद्रीय सभा, फरीदाबाद

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें। अब शीघ्र ही यह ई-पत्रिका बनने जा रही है जोकि इंटरनेट और वट्स पर भेजी जाएगी।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 200/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 1000/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

SWAMI SHRADDHANAND
A Dedicated Social Reformer and Educationist

❒ **Madhuri Madhok**

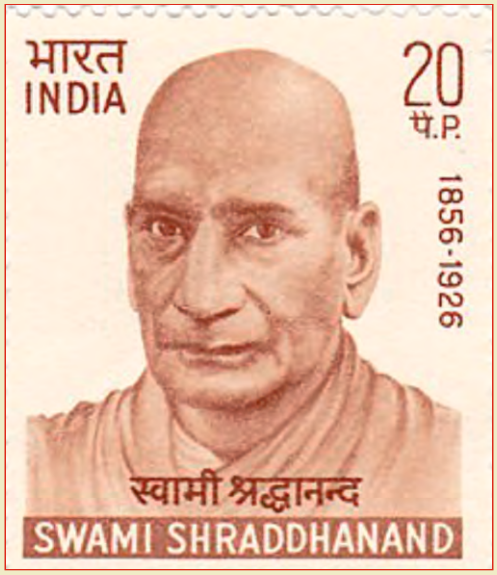

Lala Munshi Ram, also known as Swami Shraddhanand, born at Talwan village of Jallundur district, Punjab, in April 1856, was a remarkable man of many parts. Contact with Swami Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj, transformed this young atheist lawyer into a dedicated social reformer, educationist and political activist.

He founded the Gurukul at Kangri in 1901 on the lines advocated by Swami Dayanand. Among the first to enroll themselves in this GurukuI were his two sons, Harish Chandra and Indra. This Gurukul under his guidance and supervision became a model educational institution. Ramsay MacDonald who later became Prime Minister of Britain visited this Gurukul and met Mahatma Munshi Ram there. He was impressed by him and his work that he wrote in 1914: "If any modern artist wants to make a statue of Christ, he can have no better living model than Munshi Ram and if any artist wants to draw a picture of St. Peter, I would advise to see 'The impressive figure of Munshi Ram'.

After taking sanyas in 1917 and assuming the name Shraddhanand, Munshi Ram decided to leave the Gurukul and devote his life as a Sanyasi to the welfare of the people of his country.

After Jallianwala Bagh massacre at Amritsar in 1919 when no one was coming forward to organise the annual session of the Congress scheduled to be held there, Swami Shraddhanand decided to take up that onerous responsibility by agreeing to be chairman of the Reception Committee of the session and made his speech in Hindi. Mohan Das Karam Chand Gandhi who had earlier visited Gurukul Kangri and was given the honorary title of 'Mahatma' by Shraddhanand also attended this session and was publicly hailed as 'Mahatma' by Swami Shraddhanand. This proved to be a turning point in the life of Gandhi.

In 1920, he led a procession in Chandni Chowk, Delhi, against the British government and challenged the British troops to fire at his bare chest for his opposition to British rule. The troops and their Commander were literally overawed by the grand personality and will of this Bhagwa clad Sadhu. They gave way to him. About the same time, he was invited by Muslim leaders to address the gathering in Jama Masjid, Delhi. He was the first and last Hindu to have done this.

Holocaust of Hindus in Malabar and other places by Khilafatist allies of Gandhi so disgusted him that he resigned from the Congress and decided to devote his time to national reconstruction in the social and cultural fields. He started a Hindi daily from Delhi under the name 'Veer Arjun' in 1926 and also began the campaign of "Shuddhi" i.e. reconversion and absorption in the national mainstream of those who had been forcibly converted to Islam. This proved to be highly successful. Fanatic and fundamentalist Muslims were upset by this campaign. One of them, Abdur Rashid shot him dead on 23rd December, 1926 at his residence in Delhi when he was confined to bed because of some ailment.

ईश्वर का नया पता

हम सभी ने अपने-अपने तरीके से ईश्वर के घर बना रखे हैं। हमारे पास मन्दिर हैं, मस्जिद हैं, गुरुद्वारे हैं और चर्च हैं। आज हम ईश्वर के एक ऐसे नए घर का पता जानने जा रहे हैं, जिसे ज्यादातर लोग भूल गए हैं। ईश्वर के इस घर के पते को एक शायर ने इन खूबसूरत शब्दों को संजोया है।

अपना गम लेकर कहीं दूर न जाया जाए,
घर में बिखरी हुई चीजों को सजाया जाए।
घर से मन्दिर है बहुत दूर चलो क्यो यूँ कर लें,
किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाए।

क्या खूब सुहानी बात कही है कवि ने। मित्रों, यहाँ बच्चों से मतलब है- बच्चे की तरह सीधे-सादे और सरल मन से। यह एक ऐसा भोला और कोरा मन होता है, जिसमें न तो ईर्ष्या होती है और न ही प्रतिशोध। यह जिज्ञासु मन होता है, जो ज्यादा से ज्यादा जानना चाहता है। यह उत्साह, उमंग और ऊर्जा से भरा मन होता है, जो दु:ख जानता ही नहीं। यह हमेशा खुश रहने वाला मन होता है।

जाहिर है मित्रों कि हम आप बच्चे तो नहीं बन सकते, लेकिन बच्चे जैसा तो बन ही सकते हैं। हम अपने शरीर को बच्चे जैसा नहीं बना सकते, लेकिन अपने मन को तो बना ही सकते हैं और बस, जैसे ही हम ऐसा कर लेते हैं, खुद को ही ईश्वर का घर बना लेते हैं। अब हमें बाहर कहीं जाने की जरूरत नहीं रह जाती।

ईश्वर का निवास बालमन में होता है। - संकीर्णताओं से मुक्त बालमन होता है। - जो बच्चों जैसा होगा, वह हमेशा ही उल्लास और उमंग से भरा हुआ होगा। - जानने की चाह बालमन के होने का प्रमाण है।

- साभार: लाईफ मन्त्रा पुस्तक

(पृष्ठ 01 का शेष)

का अड्डा समझा जाता था। एक गुप्तचर रिपोर्ट में तो इसे सरकार के लिए शाश्वत् खतरे का स्रोत और अज्ञात खतरे का मूल बताया गया। अधिकारियों का यहां ताँता लगा रहता था। 1916 में भारत के वायस राय तथा गवर्नर-जनरल लार्ड चैम्सफोर्ड गुरुकुल में पधारे वे अत्यन्त प्रभावित हुए। उसके बाद वक्र दृष्टि शान्त् हुई और निरीक्षकों का ताँता खत्म हुआ। अब यह गुरुकुल राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्था (विश्वविद्यालय) बन गई। इसके बाद और भी कई स्थानों पर गुरुकुल स्थापित् किए गए। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली के निकट) खूब प्रगति पर है।

सर्वमेधयज्ञ-समाज सुधार और शिक्षा प्रसार हेतु अपना सारा जीवन तो समर्पित किया ही। सर्व हुतात्मा महात्मा मुंशी ने अपने दोनों पुत्रों को सबसे पहले गुरुकुल कांगड़ी में प्रवेश दिया, फिर अपनी प्रैस, समस्त अर्जित सम्पत्ति जालन्धर वाली कोठी भी गुरुकुल को दान कर दी। कन्याओं की शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु जालन्धर का कन्या महाविद्यालय और देहरादून का कन्या गुरुकुल इनकी कीर्ति-पताका को बुलन्द किए हैं। इनके त्याग, तपस्या के भव्य स्मारक हैं। नारी जाति-उत्थान, अछूतोद्धार, दलितोत्थान में इनकी सेवाएं चिरस्मरणीय हैं। आगरा, भरतपुर, मथुरा के आस-पास पाँच लाख धर्मान्तरित मल्खान राजपूतों का गंगाजल से शुद्धिकरण करके बिछुड़े भाइयों का गले मिलाया। जिस गुरुकुल के लिए सर्वस्व अर्पित किया, अन्त में उसे भी छोड़ दिया और 1917 में संन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द नाम पाया। धन्य है वह हरिद्वार की माया वाटिका जिसमें संन्यास लेकर अब यह मानव-मात्र की सेवा-हेतु समर्पित हो गए, इनकी सेवा की प्रवाह धारा राष्ट्रीय क्षितिज पर उभरी। पूरा देश इनका कार्य क्षेत्र बन गया। अब सारा संसार इनका परिवार था। 1918 में गढ़वाल में अकाल पीड़ितों की सेवा-सहायता में जुटे। 1918 में ही इनका राजनीति में प्रवेश हुआ, जो एक क्रान्तिकारी घटना सिद्ध हुई। रोलट ऐक्ट के विरोध में 30 मार्च 1919 में चालीस हजार सत्याग्रही विशाल जन समूह का नेतृत्व भगवाधारी इस आर्य नेता ने किया। इनकी हुंकार सिंह गर्जना-''निर्दोषों का खून बहाने से पहले मेरे सीने में गोली मारो ''सुनकर गोरखा सैनिकों की संगीने झुक गई, दिल्ली टाऊन हाल के मैदान में गोलियों के सामने तथा सीना देखकर इस वीरता, निर्भीकता पर कौन मुग्ध न हुआ होगा? उस समय दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द की धाक थी, महात्मा गाधी डॉ. अन्सारी और अजमल खान स्वामी जी की आवाज को बहुत महत्व देते थे। 4 अप्रैल 1919 में जामा मस्जिद की वेदी (मिम्बर) पर पहले और अन्तिम गैर-मुस्लिम नेता के रूप में वेद-मन्त्रों की ध्वनि प्रतिगुंजित की हिन्दू मुस्लिम एकता का सन्देश दिया। इससे ये अजात शत्रु बन गए मानव से महामानव बन गए। वे सच्चे अर्थों में पन्थ निरपेक्ष थे, राष्ट्रीय एकता के सबल प्रतीक थे। जालियां वाला बाग के नर-संहार के कारण क्षत-विक्षत पंजाब में सन् 1919 दिसम्बर में कांग्रेस के अधिवेशन का सफल संचालन करके पंजाब के लोगों का मनोबल बढ़ाया। उनमें आशा की जीवन ज्योति जगाई, वीरता की दीपशिक्षा पज्जवलित की। हिन्दी में दिया गया स्वागत भाषण उनकी सच्चाई उच्चता, सत्यप्रियता, वीरता और निर्भीकता का नमूना था।

1922 में अमृतसर में अकाल तख्त पर सिक्खों की मांगों के समर्थन में (गुरु का बाग के सम्बन्ध में) दिया गया भाषण और परिणाम स्वरूप रावल-पिण्डी जेल में रहना उनके साहस, सौहार्द और राष्ट्रीय एकता का ज्वलन्त उहारण है। 1924 में महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी का भव्य समारोह स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में सफलतापूर्वक मनाया गया। स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन को स्वस्थ मोड़ देने में तीन प्रमुख तत्व हैं- (1) महर्षि दयानन्द का बरेली में 1879 में साक्षात्कार और मुंशीराम को दिए गए प्रवचन उपदेश (2) पत्नी श्रीमती शिवदेवी की प्रतिनिष्ठा, अनूठी सेवा और आर्य संस्कृति के प्रति उनकी आस्था। (3) 'सत्यार्थ प्रकाश' का अध्ययननानुशीलन और उस पर आचरण।

महात्मा गांधी स्वामी जी को अपना बड़ा भाई मानते थे, उनके शब्दों में-''स्वामी श्रद्धानन्द कर्मवीर थे। श्रद्धा, सत्य और वीरता के प्रतीक थे। रैम्जे मैक्डानल जो बाद में ब्रिटिश गवर्मेन्ट के प्रधानमन्त्री बने, ने गुरुकुल कांगड़ी में स्वामी जी से भेंट की थी। इंग्लैण्ड वापिस जाने पर कहा था-''यदि वर्तमान् काल को कोई कलाकार ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित मॉडल सामने रखना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति महात्मा मुंशीराम की तरफ इशारा करूंगा। कोई मध्यकालीन चित्रकार पीटर के चित्र के लिए नमूना मांगेगा तो मैं इस जीवित मूर्ति के दर्शन् की प्रेरणा करूंगा।''

23 दिसम्बर 1926 का मनहूस दिन-साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए जीवन-भर लड़ने वाला सेनानी, मानवता का रखवाला, साम्प्रदायिक उन्माद् का निवाला बन गया। एक मदान्ध पर मजहबी जनून सवार हुआ। रूग्णशय्या पर पड़े स्वामी श्रद्धानन्द का सीना गोलियों से छलनी कर दिया। गाँधी जी के शब्दों में शानदार जीवन का शानदार अन्त हुआ। चारों ओर घृणा भय और आतंक का अन्धकार छा गया सचमुच इतिहास में वह दिन पीड़ा और क्षोभ का था। भारत रोया, दिल्ली रोई, दिल्ली की गलियां रोई, कूचे रोए। 25 दिसम्बर 1926 को विशाल जुलूस निकला-विशाल जनसमूह बड़े-बड़े सम्राटों को रिझाने वाला/मीलों तक नरमुंह-नरमुंड ही दिखाई देते थे। लाहौरी गेट से आरम्भ हुई यात्रा चाँदनी चौक के प्रमुख मार्गों से होती हुई दोपहर बाद यमुना नदी के किनारे पहुंची। अपने हृदय सम्राट के नश्वर शरीर को अग्नि के सुपुर्द करके जन-समूह अपने घरों को इस तरह लौटा जैसे उनका सर्वस्व लुट गया हो। फिजां में शायर के शब्द गूँज रहे थे- **''मौत ऐसी हो नसीबों में तो क्या रखा है जीवन में।'' और ''ऐ मौत! अगर आकर खामोश कर गई तू, सदियों दिलों के अन्दर हम गूंजते रहेंगे।'' लाला लाजपत राय इस तरह फूट पड़े- ''श्रद्धानन्द। तुमने मुझे शिकस्त दे दी। मेरे नसीब में ऐसी मौत कहाँ?** सचमुच आज आर्य समाज ही नहीं, सारा भारत सूना और असहाय हो गया है।'' सचमुच स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान सदियों तक देशवासियों के लिए प्रेरणा और स्फूर्ति का स्रोत बना रहेगा।

हम प्रतिवर्ष स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान-दिवस मनाते हैं जोश और जज्बे के साथ। एक ज्वलन्त प्रश्न हमारे सामने है-क्या हम जलसे-जुलूस तक ही सीमित रहेंगे? क्या आज परिस्थितियां बदली हैं? आज की मानवता की छाती पर दानवता का नर्तन हो रहा है। आज भी धर्मोन्माद की आग को निर्दोषों के खून से बुझाया जा रहा है। आतंकवाद्, उग्रवाद्, नक्सलवाद् के रूप में हिंसा, घृणा, वैमनस्य से वातावरण विषक्त हो रहा है। यह आग बड़बानल, दावानल के रूप में फैले उससे पहले ही इसे नेस्तानाबूद करना होगा, खेद है राजनीति के सौदागर पन्थ-निरपेक्षता, तुष्टीकरण, राज नैतिक विडम्बना के कारण राष्ट्रीय अस्मिता का सौदा कर रहे हैं। धर्मान्तारण का चक्र अब भी जारी है। षडयन्त्र अब भी पल रहे हैं, कुचक्र अब भी चल रहे हैं। हमारी आँख कब खुलेगी? जिन मूल्यों, आदर्शों, सिद्धान्तों के लिए स्वामी जीने बलिदान दिया, उनकी रक्षा से हम कब तक किनारा काशी करते रहेंगे?

दे रहा है आदमी का दर्द अब आवाज दर-दर
अब न सम्भले तो कहो, सारा जमाना क्या कहेगा?
जब बहारों को खड़ा नीलाम पतझड़ कर रहा है,
हम नहीं फिर भी जगे तो अशियाना क्या कहेगा?

- ए-15/बी नेहरू ग्राउंड, न्यू टाऊन (एन.जे.टी.), फरीदाबाद-121001, मो. 9312558420

Peace

is not the hightest goal in life.

It is the most fundamental requirement.

टंकारा समाचार दिसम्बर 2021

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2021-22-23

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2021-22

Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-06 on 1/2-12-2021

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.11.2021

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) दूरभाष: (02822) 287756

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष बोधोत्सव का आयोजन 28 फरवरी एवं 01 मार्च 2022 (सोमवार, मंगलवार) को महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ: 23 फरवरी से 01 मार्च 2022 तक

ब्रह्मा: आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत: श्री अंकित उपाध्याय (पूर्व स्नातक, टंकारा गुरुकुल)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष: पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी.कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)

बोधोत्सव

दिनांक 01.03.2022, समय दोपहर 3 बजे से सायं 5 बजे तक

मुख्य अतिथि: महामहिम श्री आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात सरकार (सम्भावित)
श्री भूपेन्द्रभाई पटेल, मुख्यमन्त्री, गुजरात सरकार (सम्भावित)

अध्यक्षता-(ऋषि स्मृति सभा):- श्री सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

विशिष्ट अतिथि:- श्री राजीव गुलाठी, चैयरमैन, महाशय धर्मपाल चैरीटेबल धर्मार्थ ट्रस्ट एवम् MDH
श्री अजय सूरी, महासचिव, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिए एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "**श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

निवेदक: योगेश मुंजाल, कार्यकारी प्रधान **सुनील मानकटाला,** कोषाध्यक्ष **अजय सहगल,** मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक-अजय सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय